ारे चोरों

प्रेम पत्र

सादर प्रणाम !

दीवाली के इस शुभ अवसर पर आपने बहुत कमाई की है, उसके लिए आपको ई देना चाहता हूं। आप यह तो जानते ही हैं कि मेरी शुभ कामनाएं हर नेक काम वाले के साथ सदा बनी रहती हैं। क्योंकि आप पुलिस के साथ आंख मिचौनी रहते हैं इसलिए मैं आपको बालक समान मानता हूं।

यह पत्र लिखने की आवश्यकता इसलिए पड़ी कि मैंने आज अखबार में एक नी खबर पढ़ी। वैज्ञानिकों ने खोज की है कि चोरी करने वाले की 'देह की चोरी किए जाने की जगह रह जाती है। इस गन्ध को जैसे पुलिस के कुत्ते हैं वैसे ही एक घण्टे बाद तक शीशी में इकट्ठा किया जा सकता है और फिर कई तक इसकी पहचान से अपराधी चोर को पकड़ा जा सकता है। मुझे यह खबर कर घबराहट खास तौर पर इसलिए हुई कि हर चोर को छोटी से छोटी आहट ीना आ जाता है। और यदि पसीने की गन्ध पुलिस के हाथ लग जाए तो चोर य पकड़ा जायेगा।

यह सोच कर कि आपके धन्धे को कोई नुकसान न पहुंचे आपकी सेवा में एक दो व रखना चाहता हूं।

१. चोरी करने जाने से पहले आप लाईफबॉय साबुन से अपने शरीर के हर अंग च्छी तरह धो डालें। २. इस बात का खास ख्याल रखें कि आप के शरीर पर भी कोई बाल न हो। इसलिए अच्छा होगा कि आप सारे शरीर पर उस्तरा ा लें।

३. कन्नौज से सबसे तकड़ा इत्र मंगवायें और उसे अपने सारे शरीर पर मल लें आपकी पसीने की गन्ध बिल्कुल छिप जाए।

४. चोरी करने जाने से पहले सात दिन तक पानी बिलकुल न पीयें जिससे सूख जायेगा और पसीना बिल्कुल नहीं आयेगा।

भगवान आपकी रक्षा करें !

आपका
चिल्ली



ी दीवानों की बातें

थ से दे दी लक्ष्मी
स न रखवा धन,
ल्ली ने अब खोज निकाला
क निराला ढंग ॥
ा जी ने डांस सिखाया
सका फल माया को लाया॥



दीवाना

43, 21 अक्तूबर से 27 अक्तूबर 1976 तक
वर्ष : 12

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज

दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग,
नई दिल्ली-१

चन्दे की दरें
छमाही : २५ रु०
वार्षिक : ४८ रु०
द्विवार्षिक : ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिये पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०



चाचा चौधरी
बाजार में औरतों की चहल-पहल थी तभी वहां दो लुटेरे लोटन और छोटन आ टपके।
छोटन देखता क्या
टॉय पिस्तौल और
बेवकूफ बन
चुपचाप अपने-अपने जेवर हमारे कदमों में डाल दो वरना हम सब को भून देंगे।
हे भगवान पिस्तौल··· यह लो गहने··· ।
देखते ही देखते लुटेरों के पास ढेरों गहने एकत्र हो गये।
सब लोग जा चुके
लो कहीं लेने के
तभी वहां चाचा चौधरी जी आगये।
क्या बात है तुम सब रो क्यों रही हो ?
दो लुटेरे हमें डरा कर हमारे गहने लेकर उस तरफ भाग गये हैं।
चाचाजी ने बिना
दिशा में दौड़
मेरे होते हुऐ भला



चाचा चौधरी और साबू के मनोरंजन कारनामे दीवाना में ही पढ़िये ।

काका के कारतूस



प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के, उत्तर काका हाथरसी के

तसनीम अहमदखां—मुरादाबाद

प्र० : आपके कारतूस भरे हुऐ रहते हैं या खाली ?

उ० : हास्य व्यंग्य के रंग से, कारतूस भरपूर,
खाली-खाली की करो, खाम-खायली दूर ।

दिनेश कुमार जैन—बूंदी (राजस्थान)

प्र० : किसी लड़की को आकर्षित कैसे करें ?

उ० : उच्चकोटि का राखिये अपना चाल चरित्र
आकर्षण के केन्द्र तब हो सकते हो मित्र ।

सुरंजन कुमार रंगीला—गया, बिहार

प्र० : मेरे सपनों में भरे अरमान हैं,
कैसे रोकूं इनको जो तूफान हैं ?

उ० : इश्क करना हो तो करना छान के,
वरना झोंके ले उड़ें तूफान के ।

राजकुमार हंसदा—'राजा', रांची

प्र० : काकी बेलन दिखाकर मार रहीं फटकार,
फिर भी कविता लिख रहे, क्या है इसमें सार ?

उ० : बेलन में गुन बहुत हैं खाकर देखो यार,
तुमभी करने लगोगे कविता की बौछार ।

अशोक कुमार मजलिसपार्क—दिल्ली

प्र० : कुछ व्यक्ति आत्महत्या क्यों करते हैं ?

उ० : नसबंदी से भय लगे, मूरख बोला रोय,
करलूंगा मैं खुदकुशी, जनसंख्या कम होय ।

एम. एच. कादरी—बीकानेर

प्र० : पत्नी और प्रेमिका आपस में टकरा जायें तो ?

उ० : उनको लड़ने दीजिये, खड़े रहो चुपचाप,
मौका पाकर वहां से, भाग जाइये आप ।

रंजीत सिंह 'सप्पी'—अबोहर, पंजाब

प्र० : मुझमें और आप में क्या फर्क है काका ?

उ० : तुकबंदी में मारें थप्पी,
तुम हो सप्पी, हम हैं गप्पी ।

बी- लाल, अहमद—बीकानेर

प्र० : स्वार्थी इंसान भगवान को क्यों भूल जाता है ?

उ० : आत्मा पर परदा पड़ा, स्वारथ का श्रीमान,
फिर कैसे भगवान को, पहिचाने इंसान ।

हरिश्चन्द्र नारंग, देहरादून

प्र० : हर समयचिंताग्रस्त रहने वाले का अंत कैसे होता है ?

उ० : चिता तुम जिसको कहते हो, वो मुर्दे को जलाती है,
बड़ी है उससे भी चिंता, जो जीते को जलाती है

बालकृष्ण 'कला' दुलियाजान 'असम'

प्र० : आप न होते, मैं नहीं होता, तो बतलाओ फिर क्या होता ?

उ० : हम ना होते तुम ना होते तो सारे दीवाने रोते,
बिन प्रश्नोत्तर हास्य गंग में, कौन लगाता इनको गोते ।

अशोक कुमार बंसल—आगरा

प्र० : काकाजी क्या आप हमेशा खादी पहिनते हैं ?

उ० : हर क्वालिटि के ड्रेस का, रखते हैं स्टाक,
जैसा अवसर, पहिन लें वैसी ही पोशाक ।

दीनदयाल मेहरोत्रा—मेरठ सिटी

प्र० : काका, यदि आपको राष्ट्रपति बना दिया जाय तो ?

उ० : माफ कीजिये, हमारी तो आफत आजायेगी,
बेचारी काकी, "राष्ट्रपत्नी" बन जायेगी ।

योगेश कुमार अग्रवाल—केसरी सिंह पुर

प्र० : एक आदमी सिर्फ रोटियों पर नौकरी के लिये मेरे पीछे पड़ रहा है, क्या करूं ?



उ० : रखलो उसको, कहदो, बेटे रोजाना लंगर में जाना,
तुमतो खुद खा ही आओगे, हमको चार चपाती लाना।

पुनीत अग्रवाल—कासगंज

प्र० : आजकल गधों की हरकतें क्यों बढ़ रही हैं ?

उ० : धन्यवाद है आपको दिया गधों पर ध्यान,
नेता बनकर गधों के, उन्हें सिखाओ ज्ञान ।

शशि जैन—फिरोजपुर कैन्ट

प्र० : औरत कौन सी चीज, मर्द को नहीं दे सकती ?

उ० : राजनीति के दाव में, कितना भी हो ढीठ,
दे सकती हरगिज नहीं, नारी अपनी सीट ।

शीलकुमार 'शीतल'—नई दिल्ली

प्र० : अस्पताल में नर्स सफेद कपड़े क्यों पहनती हैं ?

उ० : वस्त्र फकाफक, साथ ही गोरा-चिट्टा चाम,
बिना दवा पेशेन्ट को, हो जाये आराम ।

किशोरी रमण गोस्वामी—वृन्दावन

प्र० : काकाजी यह ब्लैक आउट क्या होता है ?

उ० : करते हैं वे रात में, रखते भेद छिपाय,
यदि इसको दिन में करें तो हम देंय बताय ।

कुमार हीरा प्रभाकर—सहरसा, बिहार

प्र० : कुछ लड़कियां, आंखों से ही इशारा क्यों करती हैं ?

उ० : मनोभाव जानें नहीं मूरख बुद्धूनाथ,
आंखों से आंखें मिली, समझी दिल की बात ।


अच्छी खबर बुरी खबर
भाइयो, गर्मागर्म खबर यह है कि बीवी मेरे लिये वैसा ही स्वैटर बना रही है जैसा महबूबा में राजेश खन्ना के पास था।
बुरी खबर यह है कि स्वैटर का डिजाइन उतारने के लिये मुझे बीवी को बीस बार महबूबा दिखानी पड़ी।
अच्छी खबर यह है कि मेरी साली, मेरी सास व बीवी सब मेरे लिये एक-एक स्वैटर बुन रही हैं बड़ा सस्ता रहेगा।
बुरी खबर यह है कि सब मेरे घर बैठी महीनों से खा रही हैं।
अच्छी खबर यह है कि बीवी मेरी मैगजीनों से डिजाइन सीख कर स्वैटर बना रही है मेरे लिये।
बुरी खबर यह है कि वह एक-एक फंदा पुस्तक देख कर लेती है। स्वैटर अगली सर्दियों से पहले नहीं बनेगा।
अच्छी खबर यह है कि मेरी बीवी पुराने स्वैटर उधेड़ कर नये बना लेती है। इस बार मेरे लिये बना रही है।
बुरी खबर यह है कि हमारे कुत्ते का पुराना स्वैटर आजकल दिखाई नहीं दे रहा।
बुरी खबर यह है कि मेरी बीवी आजकल पड़ौसिन को बुनाई सिखाने में बहुत टाइम बर्बाद कर रही है।
अच्छी खबर यह है कि पड़ौसिन सुन्दर है व मुझे भाई साहब कह कर नहीं बुलाती।

अर्थ अनर्थ

एक नजर में पढ़िये और दो-दो मजे लूटिये !

सुशील कुमार खेतान—कलकत्ता
"बाकी बातें फोन पर बैठकर होंगी" एक मित्र जाते-जाते बोला ।
(फोन में क्या डनलप पिलो के गद्दे बिछे हुये हैं बैठने के लिये ।)

मोहम्मद हनीफ—बिजनौर
● भिखारी दरवाजे पर आकर बोला, "बाबूजी तुम्हारे बच्चों को खाकर दुआ दूंगा"
(यह भिखारी आदमखोर है। खाने को कुछ बच्चे मांग रहा है ।)

अशोक कुमार गुप्ता—नासिक (सिटी)
● उस आदमी ने बाहर आहट सुनकर अपने नौकर को बाहर आगुन्तक को देखने भेजा। नौकर ने आकर जवाब दिया, "मालिक गधे हैं।"
(बड़ा बे शर्म नौकर है मालिक को गधा कह रहा है ।)

प्रवीननाथ—करनाल
● एक स्त्री अपने लड़के की शिकायत एक सहेली से लगा रही थी, "यह लड़का तो सारा दिन मेरा सिर खाता रहता है।"
(तुम उसे खाने को कुछ और नहीं देती होगी ।)

आशिफअली—रतलाम
किशोर रोहिड़ा—नीमचकैन्ट
● बुद्धिमान के लिये इशारा काफी है।
(बेवकूफ के लिये इशारा क्या चाय है ?)

शैलेन्द्रकुमार जैन—एटा
● डाक्टर रोगी से पूछ रहा था, "मैंने जो कैप्सूल तुम्हें दी थी क्या वह खाली थी ?"
(नहीं ! उसमें अन्दर दवा भरी हुई थी ।)

● एक आदमी बोला, "मेरी कुल्फी जम गई है क्या ?"
(आप तो बाहर खड़े हैं पहले आईस बाक्स में बैठिये फिर जमेगी आपकी कुल्फी
अरुण श्रीवास्तव—झांसी

● अध्यापक ने बच्चों से कहा, "तुम्हें मकान पर निबंध लिख कर लाना है ।"
(निबंध तो लिख दिया जायेगा लेकिन मकान को उठाकर स्कूल कौन लायेगा ?)

● "जाओ अपनी कापी पर कोई सा पाठ किताब से लिख कर लाओ", मास्टर जी छुट्टी करते हुये कहा ।
(लिखने के लिये अब पैन की भी आवश्यकत नहीं रही ।)

अमरनाथ जोतवानी—हरिद्वार
● "इस पत्र के साथ मुन्ना को ले जाओ और पोस्ट करके फटाफट आओ" मालिक ने नौकर से कहा ।
(लैटर बाक्स में किसे डालना है अच्छी तरह समझ ले भाई ।)

सुरेन्द्रपालगुप्ता—अम्बाला
● भाई साहब आपके कुत्ते ने कल मुझे खा लिया ।
(इसका मतलब इस वक्त आप कुत्ते के पेट में विराजमान हैं। मैं भी सोच रहा था कुत्ते का हाजमा कैसे खराब हो गया है।

सीताराम गुप्त—लश्कर
● तेरे द्वार खड़ा भगवान भगत भर दे, रे झोली ।
(अब तो भगवान भी झोली पसारने लगा है, अपने भक्तों के आगे ।)

दिलीप कुमार—रांची (बिहार)
● पप्पू ने मां से कहा, "मम्मी जल्दी से मेरा नाश्ता बना दो, वरना मैं स्कूल चला जाऊंगा ।"
(स्कूल कैसे जायेगा, अभी बनाती हूं तेरा नाश्ता ।)

अनिल भाटिया—बरेली
● उस दिन मैंने धोती पहने हुए गधा देखा ।
(लगता है गधों को भी अक्ल आती जा रही है ।)

विजय सारस्वत—खुर्जा
● घसीटाराम को एक पत्र प्राप्त हुआ जिसकी अन्तिम पंक्ति इस प्रकार थी, "गल्तियों को छोटा समझ कर क्षमा करना ।"
(क्षमा न करना चाहो तो गल्तियों को सजा देकर बेंच पर खड़े कर देना ।)

कुमारी ज्योति—सोनी
● गीता ने अपनी सहेली को आंख दिखाते हुये कहा, "देखियो ! क्या मेरी आंख आई हुई है ?"
(नहीं अभी तो नहीं आई, पिकनिक पर गई हुई है क्या ?)

राजेश पन्त—बरेली
● यह कार पेंतीस हजार में बैठी है।
(खड़ी कितने हजार में होगी ?)

● 'दीवाना' ने लाखों पाठकों को चढ़ा रखा है ।
(ध्यान से सर चढ़े रहना, कहीं फि[illegible] कर हाथ पांव तुड़वा बैठो)

● बड़े अफसोस की बात है मेरे [illegible] हुये तुम्हारा माल चोर चुरा कर ले गये
(आपकी निगाह देर से पहुंची म[illegible] पर……)

चन्द्रपाल ककवानी—कानपुर
● एक भुट्टे भूनने वाले से कोई बो[illegible] "मेरे मित्र जा रहे हैं पहले मुझे भून दो
(अभी भूनता हूं साहब आपक

जसबीरसिंह, नई दिल्ली
● "दो रुपये में छः नागपुर वा[illegible] बाबूजी" संतरे वाला शोर मचा रहा था
(नागपुर वाले आदमी या संतरे यह तो ब[illegible] दो…)

सुनील कुमार पाहुजा—मोगा
● मालिक ने नौकर से कहा, "[illegible] बाद में खाना खायेंगे, पहले मेहमान परोस दो ।"
(क्यों मेहमान को खाने का इरादा है क्या?

लीना कुमारी—नई दिल्ली
● "शीला ! पहले अंगीठी में कोय[illegible] डालकर अंगीठी को तेज कर लो फि[illegible] आराम से बैठना," मैंने बेटी से कहा ।
(अंगीठी के अन्दर ही बैठना कहीं बाहर [illegible] जाओ।)

कु० संगीता सिन्हा—इलाहबाद
● "बेटे सेब कहां रखे हैं ?" पापा पूछा ।
"पापा डोलची में रखे हैं।" बेटे जवाब दिया।
(डोलची में पापा रखे हैं या सेब रखे हैं

● पाठकों से अनुरोध है कि वह इ[illegible] प्रकार के अर्थ-अनर्थ के दिलचस्प वा[illegible] बना-बना कर भेजें। प्रेषक का नाम भी प्र[illegible]शित किया जायेगा । पते के स्थान पर [illegible] कूपन काट कर चिपका दीजिये । [illegible] कूपन वाले पत्र पर विचार नहीं [illegible] जायेगा । अपने वाक्य केवल पोस्ट कार्ड [illegible] ही भेजें ।

अर्थ-अनर्थ
दीवाना साप्ताहिक
8-बी, बहादुर शाह जफर [illegible]

मदहोश



मिस्टर वर्मा को घुड़दौड़ का बहुत शौक़ था । अपना काफी पैसा वह इस शौक़ में उजाड़ चुके थे । उनकी पत्नी इसी कारण उनसे बहुत नाराज थीं । लड़-झगड़ कर उन्होंने अपने पति से वादा ले लिया कि वह भविष्य में घुड़दौड़ में भाग नहीं लेंगे ।

परन्तु मिस्टर वर्मा को तो घुड़दौड़ की लत थी । वह बीवी से चोरी-चोरी घुड़दौड़ में जाते थे । उनके मित्रों को पता नहीं था कि श्रीमती वर्मा घुड़दौड़ के खिलाफ हैं ।

एक दिन एक मित्र सुबह-सुबह उनसे मिलने आ धमका और बोला—कहिये वर्मा साहब ! कल शाम तुमने रानी पर जो पैसा लगाया था उससे कुछ फायदा हुआ या नहीं ?

मिसेज वर्मा गुस्से से लाल पीली होने लगीं परन्तु बिना कुछ बोले ही वहाँ से चल दीं । उनके जाने के बाद मिस्टर वर्मा, जो अब तक घबराये हुए थे, अपने मित्र से बोले, "यार आज तुमने अच्छा नहीं किया । मेरी पत्नी मुझ पर बहुत बिगड़ेगी । मैंने तो उसको वचन दिया हुआ है कि मैं कभी घुड़दौड़ में नहीं जाऊंगा । अब तुम ही मामले को

आहा!

उनके मित्र को अपनी भूल पर बहुत दुख हुआ और वह श्रीमती वर्मा के लौटने पर उनसे बोला, "भाभी, आप शायद गलत समझीं । 'रानी' किसी घोड़े का नाम नहीं है, यह तो होटल में काम करने वाली एक लड़की का नाम है ।"

●

ओलिवर हरफोर्ड का नाम अमेरिका के विख्यात हँसोड़ों में सदा अमर रहेगा । एक बार उसके सम्मान में एक प्रकाशक ने पार्टी दी । पार्टी एक शानदार होटल में हुई थी । वह स्थान हरफोर्ड को इतना पसन्द आया कि पार्टी खत्म होने और दूसरे सभी मेहमानों के चले जाने पर भी वह वहीं टिका रहा । कुछ दिन रहने के बाद, जब वह वहाँ से जाने लगा तो होटल के कर्मचारियों ने उसे पार्टी के पश्चात् वहाँ ठहरने का बिल पेश किया । हरफोर्ड हैरान था । उसने सोचा था कि सारा खर्च प्रकाशक बर्दाश्त करेगा । लेकिन पार्टी खत्म होने के बाद उसके वहाँ ठहरने का खर्च प्रकाशक क्यों देता । होटल वालों ने कहा कि यह रकम तो उसे ही चुकानी पड़ेगी ।

"लेकिन मेरे पास इतने रुपये नहीं हैं ।" हरफोर्ड ने कहा ।

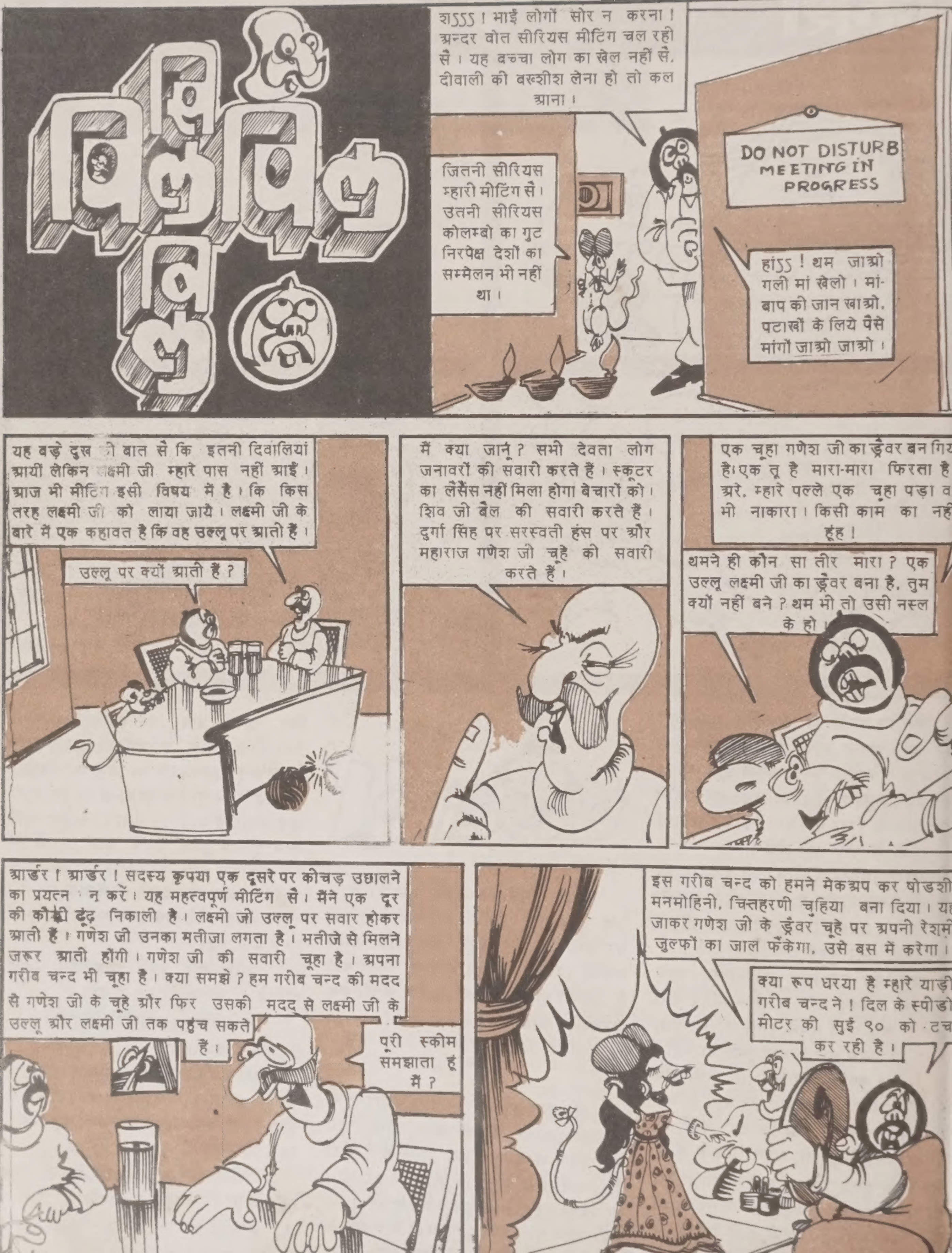
"कोई बात नहीं, आप चैक लिख दीजिये ।" होटल मैनेजर ने कहा ।

"लेकिन चैकबुक भी मेरे पास नहीं है ।" हरफोर्ड ने बतलाया ।

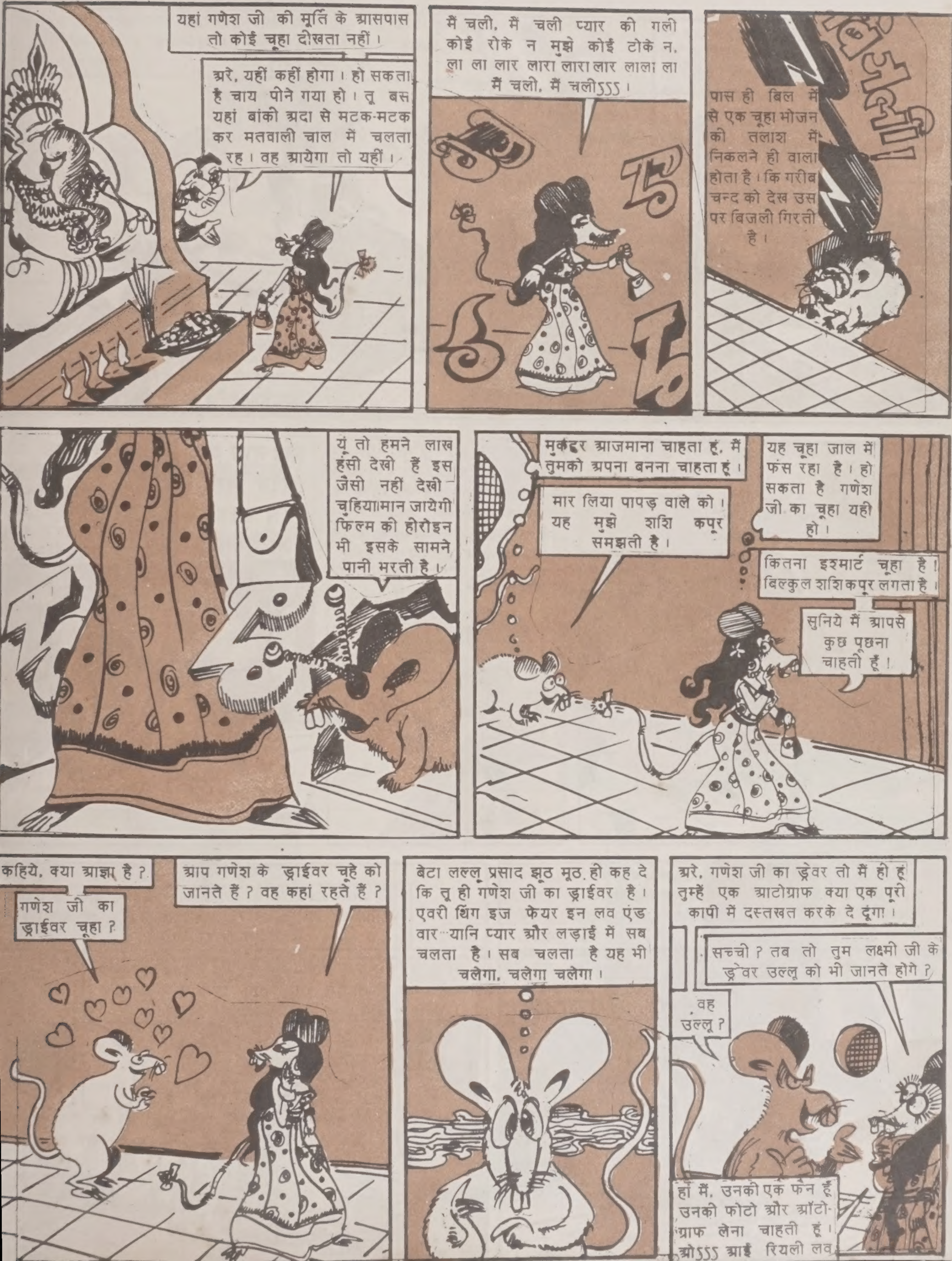
होटल-मैनेजर ने अपने पास से एक सादे चैकबुक का पन्ना निकाल कर दे दिया । हरफोर्ड ने चैक पर अपने हस्ताक्षर कर दिये । रकम भी लिख दी ।

"लेकिन जनाब ! आपने बैंक का नाम नहीं लिखा ।" मैनेजर ने आपत्ति की ।

हरफोर्ड का जवाब था—"तुम्हीं किसी अच्छे से बैंक का नाम बता दो न ?"



शऽऽऽ ! भाई लोगों सोर न करना ! अन्दर वोत सीरियस मीटिंग चल रही से । यह बच्चा लोग का खेल नहीं से, दीवाली की बख्शीश लेना हो तो कल आना ।
DO NOT DISTURB MEETING IN PROGRESS
जितनी सीरियस म्हारी मीटिंग से। उतनी सीरियस कोलम्बो का गुट निरपेक्ष देशों का सम्मेलन भी नहीं था ।
हांऽऽ ! थम जाओ गली मां खेलो । मां-बाप की जान खाओ, पटाखों के लिये पैसे मांगों जाओ जाओ ।
यह बड़े दुख की बात से कि इतनी दिवालियां आयीं लेकिन लक्ष्मी जी म्हारे पास नहीं आईं । आज भी मीटिंग इसी विषय में है । कि किस तरह लक्ष्मी जी को लाया जाये । लक्ष्मी जी के बारे में एक कहावत है कि वह उल्लू पर आती हैं ।
उल्लू पर क्यों आती हैं ?
मैं क्या जानूं ? सभी देवता लोग जनावरों की सवारी करते हैं । स्कूटर का लैसेंस नहीं मिला होगा बेचारों को । शिव जी बैल की सवारी करते हैं । दुर्गा सिंह पर सरस्वती हंस पर और महाराज गणेश जी चूहे की सवारी करते हैं ।
एक चूहा गणेश जी का ड्रैवर बन है।एक तू है मारा-मारा फिरता है अरे, म्हारे पल्ले एक चूहा पड़ा भी नाकारा । किसी काम का हूंह !
थमने ही कौन सा तीर मारा ? एक उल्लू लक्ष्मी जी का ड्रैवर बना है, तुम क्यों नहीं बने ? थम भी तो उसी नस्ल के हो ।
आर्डर ! आर्डर ! सदस्य कृपया एक दूसरे पर कीचड़ उछालने का प्रयत्न न करें । यह महत्वपूर्ण मीटिंग से । मैंने एक दूर की कौड़ी ढूंढ़ निकाली है । लक्ष्मी जी उल्लू पर सवार होकर आती हैं । गणेश जी उनका भतीजा लगता है । भतीजे से मिलने जरूर आती होंगी । गणेश जी की सवारी चूहा है । अपना गरीब चन्द भी चूहा है । क्या समझे ? हम गरीब चन्द की मदद से गणेश जी के चूहे और फिर उसकी मदद से लक्ष्मी जी के उल्लू और लक्ष्मी जी तक पहुंच सकते हैं ।
पूरी स्कीम समझाता हूं मैं ?
इस गरीब चन्द को हमने मेकअप कर षोडशी मनमोहिनी, चित्तहरणी चुहिया बना दिया । जाकर गणेश जी के ड्रैवर चूहे पर अपनी रेशमी जुल्फों का जाल फेंकेगा, उसे बस में करेगा ।
क्या रूप धरया है म्हारे गरीब चन्द ने ! दिल के स्पीडो मीटर की सुई ९० को टच कर रही है ।


यहां गणेश जी की मूर्ति के आसपास तो कोई चूहा दीखता नहीं।
अरे, यहीं कहीं होगा। हो सकता है चाय पीने गया हो। तू बस यहां बांकी अदा से मटक-मटक कर मतवाली चाल में चलता रह। वह आयेगा तो यहीं।
मैं चली, मैं चली प्यार की गली कोई रोके न मुझे कोई टोके न, ला ला लार लारा लारा लार लाला ला मैं चली, मैं चलीऽऽऽ।
पास ही बिल में से एक चूहा भोजन की तलाश में निकलने ही वाला होता है। कि गरीब चन्द को देख उस पर बिजली गिरती है।
यूं तो हमने लाख हसीं देखी हैं इस जैसी नहीं देखी चुहिया।मान जायेगी फिल्म की हीरोइन भी इसके सामने पानी भरती है।
मुकद्दर आजमाना चाहता हूं, मैं तुमको अपना बनना चाहता हूं।
मार लिया पापड़ वाले को। यह मुझे शशि कपूर समझती है।
यह चूहा जाल में फंस रहा है। हो सकता है गणेश जी का चूहा यही हो।
कितना इस्मार्ट चूहा है! बिल्कुल शशि कपूर लगता है।
सुनिये मैं आपसे कुछ पूछना चाहती हूँ!
कहिये, क्या आज्ञा है?
आप गणेश के ड्राईवर चूहे को जानते हैं? वह कहां रहते हैं?
गणेश जी का ड्राईवर चूहा?
बेटा लल्लू प्रसाद झूठ मूठ ही कह दे कि तू ही गणेश जी का ड्राईवर है। एवरी थिंग इज फेयर इन लव एंड वार...यानि प्यार और लड़ाई में सब चलता है। सब चलता है यह भी चलेगा, चलेगा चलेगा।
अरे, गणेश जी का ड्रेवर तो मैं ही हूं तुम्हें एक आटोग्राफ क्या एक पूरी कापी में दस्तखत करके दे दूंगा।
सच्ची? तब तो तुम लक्ष्मी जी के ड्रेवर उल्लू को भी जानते होगे?
वह उल्लू?
हां मैं, उनकी एक फैन हूं उनकी फोटो और ऑटोग्राफ लेना चाहती हूं। ओऽऽऽ आई रियली लव



अरे वह तो अपना लंगोटिया यार है। जब भी लक्ष्मी जो गणेश जी के पास आती हैं तो हम दोनों मिल बैठते हैं। अभी पिछले महीने ही तो मेरे से पैसे उधार ले गया था घर भेजने के लिये।
तब तो तुम मुझे भी उससे मिलवाओ, मैं उसकी भी फैन हूं।
वाह, यह कौन सी बात है? मैं उस उल्लू को कान से पकड़ कर लाकर तुम्हारे कदमों पर डाल दूंगा।
हायेऽऽऽ तुम कितनी प्यारी बातें करते हो?
भुला नहीं देना जी, भुला नहीं देना जमाना खराब है भुला नहीं देना जी भुला नहीं देनाऽऽऽ
दगा नहीं देना जी, दगा नहीं देना जमाना खराब है दगा नहीं देना जी दगा नहीं देना...
गरीब जान के मुझको न तुम भुला देना, तुम्हीं ने दर्द दियो है तुम्हीं दवा देना, गरीब जान के...
लो भाई लोगों, थारा काम बन गया ऐसा पक्का बना है कि फर्श पर मारोगे तो भी नहीं टूटेगा। खुद गणेश जी का ड्रॅवर ही मेरे जाल में फंस गया। खूब उल्लू बनाया मैंने उसे।
और क्या? बेचारे से मुझे प्रेम का नाटक करना पड़ा। हां सुनो आज जब लक्ष्मी जी आयेंगी तो वह उनके ड्रॅवर उल्लू को लेकर यहां आयेगा। मैंने दोनों को इंव्राइट किया है, देविल कम एराउंड इलेविन टुनाइट।
बाई गाड यार गरीब चन्द! यू आर जीनियस!
फिर लक्ष्मी जी अपने ड्रॅवर को ढूंढ़ती हमारे पास आयेंगी तो हम पैर पकड़ कर छोड़ेंगे ही नहीं
क्या बात है भई लल्लू प्रसाद, बड़ा प्रसन्न नजर आ रिया है?
जभी तेरा मुंह जीरो वाट के लट्टू की तरह जल रिया है।
यार, क्या बताऊं? आज जिन्दगी से मुलाकात हो गयी। एक हसीना से जान पहचान हुयी। बातचीत हुयी, कसमें वादे हुये।
लेकिन यार एक अड़चन है।
मैंने उससे लक्ष्मी जी के वाहक उल्लू से मिलवाने का प्रामिज कर रखा है। पोल खुलने का डर है, वह फिर मेरे बात भी नहीं करेगी।
अरे लल्लू, तू फिक्र क्यों करता है? तेरा यार नटवर लाल अभी जिन्दा है। यार ही तो ऐसे वक्त काम आते हैं। मैं बनाऊंगा उल्लू का भेष! बस तेरी समस्या हल हो गयी?
यार तेरा अहसान उम्र भर नहीं भूलूंगा।



सिलबिल पिलपिल के नए कारनामे अगले अंक में पढ़िए।

आत्म हत्य

"मीठे-रसीले आम दसहरी, मीठे… रसोले…ए-ए…" सड़क पर से फल वाली की अनवरत पुकार सुनाई दे रही थी। लेने का मन न हो, तब भी मन कर आए—ऐसी ही मधुर आह्वान-भरी पुकार थी वह। सुमन्त बड़ी देर से इसे अनसुनी कर रहा था। परन्तु ठीक द्वार के सामने खड़ी हो, जब फल वाली ने पुनः वही गुहार मचाई, तो सुमन्त की उँगलियों ने उसे बुला ही लिया।

दो सेर आम ले वह अन्दर आया। आम टोकरी में रख दिए और कुर्ते की जेब में से पैसे निकालने लगा, परन्तु जेब खाली थी। उसने पुकारा—"चन्द्रा, मेरे कुर्ते की जेब में पाँच रुपए का नोट पड़ा था न।"

"तो पड़ा होगा उसी में।" अन्दर से ही उसका तीखा स्वर गूंज उठा।

"इसमें तो नहीं है।" सुमन्त ने फिर पुकारा।

"नहीं है, तो मैं क्या करूँ?" और चन्द्रा दनदनाती हुई आ पहुंची। बोली—"चीज इधर-उधर रख देते हो, आफत आती है मेरी। इसी में होगा, जायेगा कहाँ?"

उत्तर में सुमन्त ने दोनों जेबें उलट दीं।

"तो मुझे दिखा क्या रहे हो? तुम्हीं रखे होंगे और कहीं।" वह तुनककर बोली।

"नहीं, मैंने तो इसी में रखे थे, मुझे अच्छी तरह याद है। कल की ही तो बात है। पाँच रुपए का कोयला लाया था और पाँच रुपए इसी में रख दिए थे।"

"तब कौन ले गया? घर में नौकर-चाकर हैं नहीं। एक महरी है, सो वह इस कमरे में झाँकती तक नहीं। मैंने तो तुम्हारा कुर्त्ता छुआ भी नहीं। हाँ, यदि तुम्हारे लाड़ले ने चुरा लिए हों, तो मैं जानती नहीं।"

"क्या कह रही हो तुम?"

"मेरी बात का तुम्हें विश्वास क्यों होने लगा भला! मैं दूसरी माँ जो ठहरी! बुलाकर पूछ न लो उससे। मेरी बात झूठ निकले, तो जो चोर की सजा, सो मेरी सजा।"

सुमन्त हतबुद्धि की तरह उसका मुंह ताकता ही रह गया। पांच रुपए तो क्या, लड़के ने कभी पांच पैसे भी बिना पूछे नहीं लिये थे। परन्तु चन्द्रा का तर्क भी तो असंगत नहीं लगता था। लेने वाला और था ही कौन? हो सकता है उसे कोई जरूरत पड़ गई हो और बताने का अवसर न मिला हो। उसने स्वर ऊँचा कर पुकारा—"किशोर, जरा यहाँ तो आना।"



किशोर सामने आ खड़ा हुआ। भोला-भाला-सा १३ वर्षीय सुकुमार, जिसके नयनों में अभी से प्रौढ़ता की गम्भीर छाप थी।

"तुमने इस कुर्ते में से रुपए लिए थे, बेटा?" मृदु प्यार-सहित सुमन्त ने पूछा।

"नहीं तो।" उसने कुछ चकित होकर कहा।

"तुमने नहीं लिये, तो किसने लिये?" चन्द्रा व्यंग्यपूर्वक बोली—"और कौन आता है इस कमरे में?"

कारण-अकारण विमाता के ताने और धमकियाँ सुनते-सुनते किशोर का कोमल हृदय छलनी हो चुका था। सिर झुकाकर सब-कुछ सुन लेना और कुछ उत्तर न देना, यही प्रण वह किये बैठा था। किन्तु चोरी का अपराध सिर पर मढ़े जाते देख वह बेतरह चिढ़ गया। एक टेढ़ा उत्तर दिये बिना वह न रह सका। बोला—"मुझे क्या मालूम? मैं क्या दिन-रात तुम्हारे कमरे का पहरा देता रहता हूँ?"

सुमन्त दंग रह गया। चन्द्रा रोष में भरकर चीख उठी—"जवाब देता है नालायक! ऐसे बेटे से तो बेटा न होना अच्छा! चोरी करता है और ऊपर से झूठ बोलता है। लाज नहीं आती तुझे जरा-जरा-सी बात पर झूठ बोलते?"

एक बार जबान खुल जाती है, तो उस पर दिमाग का नियन्त्रण ढीला पड़ जाता है। किशोर ने तनकर कहा—"देखा था तुमने मुझे चोरी करते? मेरे ही पिता से दिन-रात मेरी ही चुगली खाते और नित नये दो… मढ़ते तुम्हें कभी लाज नहीं आती, तो मु… ही क्यों आने लगी? तुम्हारा ही तो बे… हूँ न!"

"देख रहे हो। सुन रहे हो इसक… बात।" चन्द्रा के नयनों से टप्-टप् आँसू टप… कने लगे।

"छिः किशोर, क्या माँ से बात कर… का यह ढंग है?"

"बस, केवल यही?" रोना भूल चन्द्र… भिनभिना उठी—"और कोई बाप होता, त… ऐसी उच्छृंखलता पर बेटे की चमड़ी उधे… कर रख देता। तभी तो इसका साहस बढ़ता… जा रहा है। आज तो पाँच रुपए ही चुरा… हैं, देखना कल घर का सारा सामान चुराक… बेच न खाये तो मेरा नाम नहीं।"

"देखो, किशोर!" सुमन्त ने समझाने… के ढंग से कहा—"माता-पिता से पूछे बिना… रुपए कदापि नहीं लेने चाहिएँ। चाहे कितना… ही आवश्यक कार्य क्यों न हो। अच्छा, बता… दो अब भी कि किसलिए लिये थे रुपए… तुमने?"

किशोर तड़प उठा। बोला—"आप भी… यही समझते हैं, डैडी? जब मैं कह रहा हूँ… कि मैंने नहीं लिये…"

चन्द्रा ने मुंह बिराकर कहा—"ऐसा ही… सच बोलने वाला है न जो डैडी झट से विश्… वास कर लेंगे। कमीने का बेटा कमीनेपन… की बातें नहीं करेगा तो दिखेगा कैसे कि म… कैसी सत्यवन्ती थी!"

दिवंगता माँ का यह अपमान ! कहाँ की बात कहाँ जा पहुंची । उचित-अनुचित का ज्ञान जाता रहा । किशोर की आँखों में खून उतर आया । उसने तड़ से एक चांटा विमाता के मुंह पर जड़ दिया ।

चन्द्रा की आंखों में आंसू छलक आये । गाल पर हथेली रख वह फलवाली को पैसे देने चली गई ।

अपनी आंखों के सामने पत्नी का यह अपमान ! अपरिमेय रोष से सुमन्त कांप उठा । उसका हाथ उठा और गिरा, उठा और गिरा । उसे होश नहीं था कि वह क्या कर रहा है और किशोर चुपचाप पिटता रहा । उसके मुंह से एक आह तक न निकली, एक उफ तक न तड़पी । सहसा सुमन्त का छोटा लड़का आकर उसकी टाँगों से लिपट गया —"क्या है, डैडी ? क्यों मार रहे हो भैया को डैडी…"

अबोध बालक का क्रन्दन सुन सहसा सुमन्त को होश आया । उसे गोद में उठा उसके नन्हे से वक्ष में अपना मुख छिपा वह तेजी से बाहर निकल गया ।

सिर नीचा किये किशोर धीरे-धीरे अपने कमरे में लौट आया । उसका शरीर दुख रहा था, पर उसे पता न था । उसका हृदय जल रहा था, पर उसे होश न था । उसे याद आ रहे थे वे स्वर्णिम दिन, जब कि उसकी माँ इस धरती पर हँसती थी, गाती थी और वह मचल-मचलकर लोटता था । माँ दुलार कर-करके मनाती थी, पर आज कोई नहीं है ऐसा, जिसकी गोद में मुंह छिपा वह जी भरकर रो सके । तब रोने से क्या लाभ ?

भाग्यवान सुख-स्वर्ग में बसते हैं, कठोर वास्तविकता की यह निर्मम धरती है अभागों की । किसी का भाग्य अधिक खोटा है, किसी का कम । बस, केवल इतना ही तो धरती पर राजा के पुत्र भी पलते हैं और दीन-अभागे, राह की धूलि में लोटने वाले अनाथ भी । सबकी सुधि लेने वाले वह ईश्वर तो एक ही हैं न । वही तो हैं जगत-नियन्ता, जगत-पिता, जड़-चेतन का विध्वंसक और निर्माता ।

क्षणिक सुख-भोग की पूर्ति के लिए जो पुरुष उसके जन्म का कारण बना था, स्नेह की उस कड़ी के टूट जाने पर यदि वह आज अपनी उस भूल के लिए पश्चात्ताप करता है, तो क्या उसके लिए यह उचित है कि जोंक की तरह उससे चिपटा रहे ? मूक-बधिर-पंगु बन उसके घृणित आश्रय में जीवन के क्षण गँवाता रहे ? जब पत्थर में रहने वाला अदना कीड़ा भी अपनी उदर-पूर्ति के लिए साधन जुटा लेता है, तब दो हाथ और दो पैरों वाला स्वस्थ-सबल वह मानव की सन्तान क्या अपने जीवन का लक्ष्य स्वयं न खोज सकेगा ?. किशोर का सम्पूर्ण शरीर थर-थर काँप रहा था । दोनों हथेलियों के बीच मुख छिपा वह तकिए में सिर गड़ाकर पड़ रहा ।

और आत्म-ग्लानि से सुमन्त का हृदय फटा जा रहा था । आज उसने मातृहीन किशोर को मारा था । अपने शिशु को, अपने लाल को । क्योंकि वह अपनी माँ का अपमान सहन नहीं कर सका था । सुमन्त का हृदय रो रहा था, पर उसकी आँखें जल रही थीं ? उसका अन्तर्मन उसे बार-बार धिक्कार रहा था—"अपनी भावनाएँ तो भुला ही चुका था अभागे, उसकी भावनाओं का भी आदर नहीं कर सका तू ! छिः ! मनुष्यता भुलाकर एकदम पशु बन बैठा तू ! जिस हाथ से मृत्यु-शैया पर पड़ी पत्नी की अलकें संवारी थीं, जिस हाथ से उस अकाल-काल कवलिता का हाथ थाम वचन दिया था कि केवल पिता ही नहीं, उस अभागे, शिशु की माँ भी बनकर रहेगा, आज उसी हाथ से अपने उस रक्त-बिन्दु के अन्तस्थल में अपने प्रति घोर घृणा भर दी । माँ बनना तो दूर रहा, पिता का कर्तव्य भी पूरा न कर सका। हाय अभागे ! क्या यह घृणा अब इस जन्म में दूर हो सकेगी ? क्या वह शिशु अब भी तेरा वही लाड़ला बेटा बना रह सकेगा ?"

"क्यों नहीं रह सकेगा ? पिता-पुत्र की ममता का बन्धन इतना कच्चा नहीं कि ऐसी आसानी से टूट जाय ।" सुमन्त ने जोर से कहा । हृदय के उदार मुख से निकल पड़े, तो उसके टूटते हृदय को और बल मिला । उसने मन-ही-मन सोचा कि वह पुत्र से क्षमा माँगेगा और भविष्य में उसे चन्द्रा से दूर ही रखेगा ।

लड़का अब बड़ा हो गया है । जरा-जरा-सी वस्तु के लिए पैसे माँगने में उसे संकोच होता होगा । जहाँ से भी हो, उसे कुछ जेब-खर्च अवश्य देना होगा । अब वह अबोध नहीं, समझदार है । घर की आर्थिक स्थिति उसे भली-भाँति अवगत है । वह कभी पैसे व्यर्थ नहीं फूंक सकता । फिर वह स्वयं भी इतना दरिद्र नहीं कि बच्चे की एक साध भी पूरी न कर सके । पत्नी के लिए साड़ी, लिपस्टिक, पाउडर आदि में न जाने कितने रुपये फुंक गये, किन्तु किशोर की एक भी बाल-इच्छा पूरी न हो सकी । एक कैमरा यदि खरीद ही लिया गया होता, तो कोई बड़ी भारी कमी न आ जाती । तर्क द्वारा पश्चात्ताप को पराजित कर सुमन्त मन-ही-मन उत्फुल हो उठा । उस दिन कार्यवश वह बाजार न जा सका और इस कारण पुत्र को समक्ष बुलाने का साहस भी न कर सका ।

अगले दिन दफ्तर से लौटते समय सुमन्त एक सुन्दर-सा कैमरा खरीद लाया । आज उसके पैरों में मानो पंख लग गये थे । पुलकित मन के आगे बार-बार एक मनो-कल्पित दृश्य नाच उठता था । जब वह किशोर के हाथ में कैमरा देगा, तो उसके नेत्र एकदम चमक उठेंगे । वर्षों की अधूरी इच्छा पूरी होते देख उसका बाल-मुख कमल-सा खिल उठेगा । तब उसे अपने अंक में भर उसका मुख चूम लेगा और अपने अपराध के लिए क्षमा भी माँग लेगा । न-जाने कब से उसने पुत्र का चुम्बन नहीं किया । यह बात भी आज उसे याद आई । वह अधीर हो उठा । उन अरुणाभ कपोलों का स्पर्श पाने के लिए उसका वात्सल्य फड़क उठा ।

घर की चौखट में पैर रखते ही उसने पुकारा—"किशोर ! अरे ओ किशोर !"

"किसे पुकार रहे हो !" चन्द्रा ने आकर कहा—"कल से कहीं पता भी नहीं है । वह तो एकदम आवारा हो गया है ।"

"कल से ? क्या कह रही हो ? क्या वह सारी रात बाहर रहा ?"

"नहीं जी, मैं तो झूठ-मूठ लगा-बुझा रही हूँ ! दूसरी माँ जो ठहरी ।" चन्द्रा तन-कर बोली—"दोपहर को भोजन नहीं किया । बुलाने गई, तो मुंह ढँककर पड़ रहा । शाम को मैंने उसे बाहर जाते देखा । सीधे-से पूछा कि कहाँ जा रहा है, तो अँगूठा दिखाकर चलता बना ?"

"रात को भी नहीं आया ?" मूढ़ भाव से सुमन्त ने पूछा ।

"कह तो रही हूँ कि नहीं आया ।" चन्द्रा झुंझला उठी ।

"तब तुमने मुझे रात ही क्यों नहीं बताया ?"

"बताती क्या ? मुझे क्या पता था हरजत ने रात-भर आवारगी करने की ठान है ! नौ बजे, दस बजे; नहीं आया, तो मैं भी द्वार बन्द कर लेट रही । सोचा था कि आकर खटखटायेगा, तो खोल दूंगी ।"

"सच पूछो, तो वह तुम्हारे ही डर से नहीं आया ।" सुमन्त एकाएक गरज उठा—"लौटने में उसे कुछ देर हो गई होगी और

आधी रात तुम्हारी विष-भरी वाणी की अनवरत गूंज से मुहल्ले को जगाना उचित न समझ वह बाहर ही कहीं पड़ रहा होगा।"

"हाय री माँ, मुझे मौत क्यों नहीं आ जाती!" चन्द्रा तत्क्षण पैर फैलाकर रोने बैठ गई—"मेरी बातों में ऐसा ही जहर भरा है, तो मुझे ही जहर क्यों नहीं पिला देते? तुम बाप-बेटे मजे से रहना फिर। तब मैं ..."

पर आज उस क्रदन पर सुमन्त का ध्यान न गया। उसके नेत्रों में अश्रु छलक आये। बोला—"वह अवश्य घर छोड़कर भाग गया है, चन्द्रा! उस मातृहीन बालक को कल मैंने मारा था। हाँ, अपने इन्हीं हाथों से। उफ्!"

रोना छोड़ चन्द्रा भिन्ना उठी—"मारा था, तो क्या हुआ? मार किस लड़के पर नहीं पड़ती? इसीलिए क्या सब घर छोड़कर चल देते हैं? अरे छुट्टी के दिन हैं, मौज कर रहा होगा कहीं। आ जायेगा शाम तक।"

सुमन्त ने अपना सिर धुन डाला—"नहीं, अब वह नहीं आयेगा। कभी भी नहीं। उस सुकुमार शिशु की कोमल देह में मेरा ही रक्त है, चन्द्रा। गहन अपमान का ऐसा तीखा घूंट वह कदापि न पी सकेगा। मेरी मार कदाचित् वह सहन कर लेता, किन्तु उपेक्षा ने उसका दिल तोड़ दिया होगा। कल सारे दिन और सारी रात मैंने उसकी खबर नहीं ली। उफ् मैंने अपने हाथों अपने पुत्र का जीवन नष्ट कर डाला।"

"अजीब आदमी हो तुम भी! क्रोध में भरकर यदि चला भी गया, तो लौट आयेगा शाम तक। भूख लगेगी, तो झख मारकर आयेगा। उसकी जेब में तो एक पैसा भी नहीं है।"

सुमन्त ने एक बार सिर उठाकर चन्द्रा की ओर देखा और तेजी से बाहर निकल गया।

दिन-भर सड़कों की धूल छान रात बीते जब सुमन्त घर लौटा, तो द्वार पर ही ठिठक रहा। आगे बढ़ने को पैर उठ ही न सके। चन्द्रा उसकी प्रतीक्षा में पलकें बिछाए बैठी थी। देखते ही उसे जबरन अन्दर घसीट ले गई।

अपना सर्वस्व, अपने प्राण, अपना सब-कुछ गँवाकर भी खोज करेगा वह अपने शिशु की—यही तो प्रतिज्ञा की थी सुमन्त ने। एक के बाद एक कर चार-पाँच दिन बीत गये। अड़ोसी-पड़ोसी, निकट-सम्बन्धी, अखबार, रेडियो, कहीं भी खबर देना तो नहीं भूला वह। फिर भी किशोर का कुछ पता न लगा। रस्सी निरन्तर चलती रहे, तो पत्थर पर भी धारी पड़ जाती है। चौबीस घण्टे 'आवारा' शब्द सुनते-सुनते सुमन्त को भी विश्वास-सा हो चला था कि किशोर सच ही नालायक था। घर रहता, तो अवश्य किसी दिन माँ-बाप का मुख काला करता। स्वयं चला गया, यह एक तरह से अच्छा ही हुआ। समय पर आहार नहीं, विश्राम नहीं। चिन्ता-जर्जरित तन-मन लिए, वह हताश हो छिप-छिपकर रोया करता था। धीरे-धीरे वह भाव दूर होने लगा।

चन्द्रा ने आकर मुस्कराते हुए कहा—"सुना जी, तुम्हारे सपूत का समाचार लाई हूँ।"

अन्धकार में जैसे बिजली कौंधी। सुमन्त ने चौंककर सिर उठाया।

चन्द्रा ने कहा—"ये अपनी पड़ोसिन हैं न वकीलनी। यह कल सिनेमा गई थीं। वहाँ पान की दुकान पर तुम्हारे लाड़ले खड़े थे और संग में थे चार-छः गुण्डे!"

सुमन्त का सिर झुक गया। मरे-से स्वर में कहा—"मैं यह नहीं मान सकता।" उसकी वाणी में ओज न था। यह वह स्वयं समझ रहा था कि जिस लड़के की जेब में एक पैसा भी न हो, जो अभी केवल आठवीं कक्षा में पढ़ता है, जिसके सूखे शरीर में दो पैसे की मजदूरी कर लेने योग्य भी शक्ति न हो, आज पखवाड़े से वह कहाँ खा रहा है, कहाँ सो रहा है? चार दिन बाद स्कूल खुलने वाला है, क्या उसे इस बात का भी होश नहीं? माना कि उसके प्रति अन्याय किया गया, किन्तु इसका यह अर्थ तो नहीं होता कि घर से नाता ही तोड़ ले।

तभी बूढ़ी महराजिन पान चबाते-चबाते आ पहुंची। आते ही बोली—"अरे लल्ला, कल तेरा किशोर मिला मुझे।"

बुझे-से स्वर में सुमन्त ने पूछा—"कहाँ?"

"अरे, तेरा रामकिशन ही पकड़ लाया था उसे, आते ही बोला—'माँ, माँ, देख कौन आया है?' और देखते ही मैं अवाक् रह गई, बेटा। बच्चे का फूल-सा मुख कुम्हलाकर रह गया है। गोद में बैठाकर पूछा—'इतने दिन कहाँ छिपे रहे, लल्ला? तुम्हारे बाप खोज-खोजकर हार गये।' तो वह चुप बैठा रहा। रामकिशन ने ही कहा—'वसन्त सिनेमा में नौकरी कर ली है इसने। कहता है कि दिन को पढ़ूँगा और रात को कमाऊँगा।' मैंने कहा—'यह कैसा पागलपन है, भैया? यह क्या तेरी नौकरी करने की उम्र है? लाओ पिओ और...' पर उसने तो मुझे बात ही पूरी करने दी। चिढ़कर बोला—'और ये जो जरा-जरा से लड़के दिन में भीख माँगते हैं, जेब काटते हैं और रात को चोरी करते हैं, यह क्या इनकी भीख माँगने की उम्र है, मिसरानी माँ?' मेरी तो बोलती बन्द हो गई, बेटा। क्या कहूँ उस बच्चे से, समझ न सकी। वह फिर बोला—'मैं जानता हूं, मिसरानी माँ, कि तू क्या कहना चाहती है। इसीलिए मैं किसी से मिलता नहीं। किसी जान-पहचानवाले को देखते ही छिप जाता हूं। जाने किशन भैया ने कैसे देख लिया मुझे। मैं जानता हूं कि जो कोई मिलेगा यही कहेगा कि गलती तुम्हारी ही है किशोर। जाओ, घर जाओ। माँ-बाप से माफी माँग लो। भले लड़कों का यही काम है। गलती की बात तो मैं जानता नहीं मिसरानी माँ; बस इतना जानता हूं कि अब जीते-जी उस घर में पैर न रखूंगा। ये दोनों आखें फोड़ लूंगा, पर उस घर की मालकिन का मुंह न देख सकूंगा।'

जिन्दगी बरबाद हो तेरे दुश्मनों की। लड़ाई-झगड़ा किस घर में नहीं होता? चलना कल मेरे साथ। माँ-बेटे चलकर उस पाजी को मना लायेंगे।"

"वह अब नहीं आयेगा, मिसरानी माँ।"

"आयेगा कैसे नहीं? इस तरह अधीर नहीं होना चाहिए, भैया। आखिर वह तेरा ही तो बेटा है। जन्म की माया-ममता ऐसी आसानी से थोड़े ही टूट जाती है। बहू कहाँ चली गयी? ले, ये पाँच रुपये दे देना उसे। मैं चली।"

"कैसे रुपये?"

"अरे, अभी उस दिन एकाएकी किशना के सुसर आ गये थे। घर में कुछ था नहीं। मैंने सोचा, चिन्ता क्या है, अपनी लक्ष्मी बहू से ही माँग लाऊँ। पहले तो वह बोली कि हैं नहीं। मेरा जी धक्-से हो गया। तभी वह सोचकर बोली कि देखूं शायद उनके कुर्ते की जेब में पड़े हों। कोयला तो थोड़ा-सा ही लाये थे।"

"चाची!" सुमन्त का हृदय बैठा जा रहा था।

"क्या करूँ, सुमन्त, इससे पहले लौटा ही नहीं सकी, बेटा। कल ही तो किशना को तनख्वाह......"

उसकी मुंह की बात मुंह में ही रह गई,

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

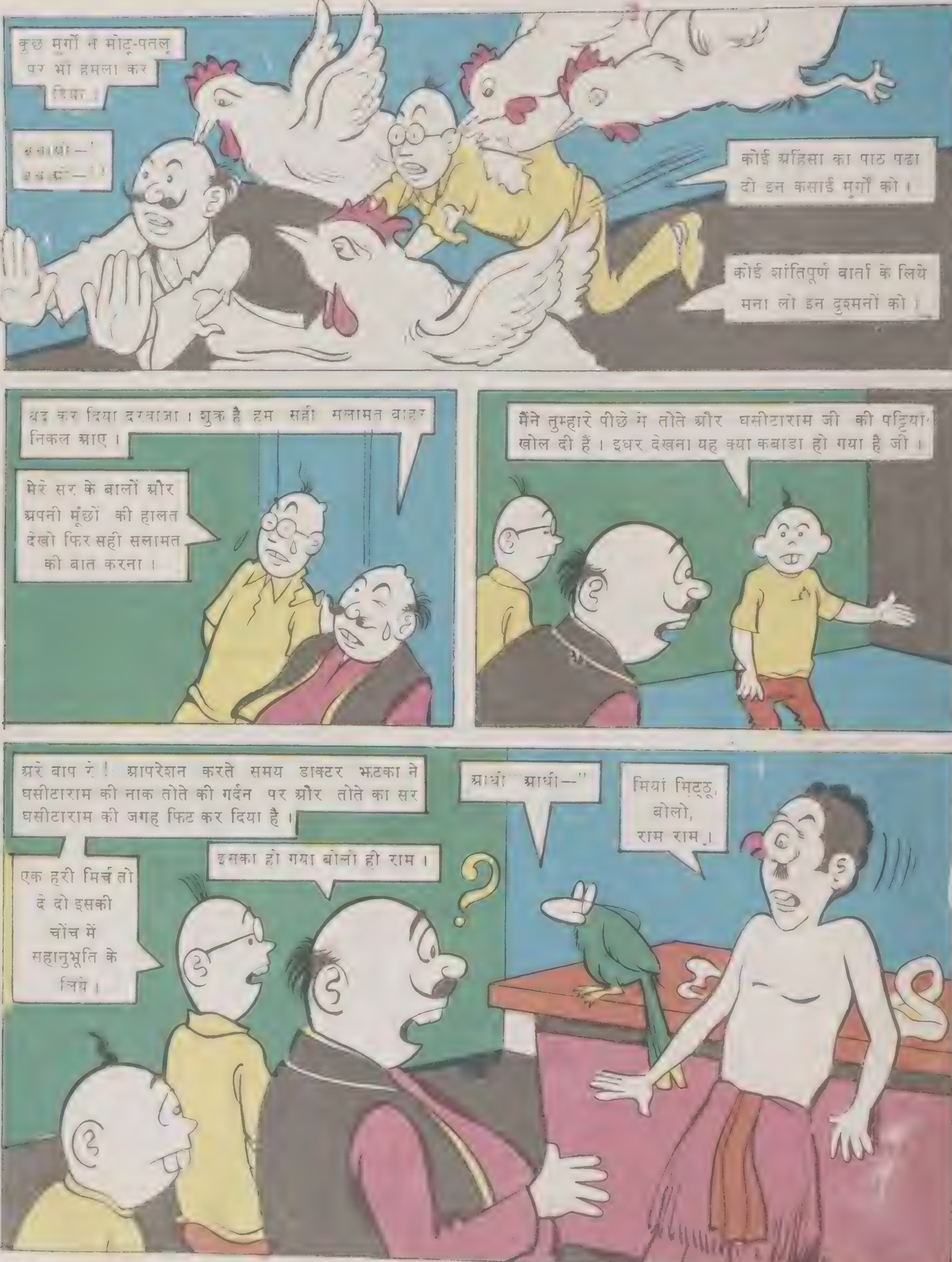
मोटू पतलू

पिछले दिनों रजियानाम की एक स्मगलर ने अफ्रीका के जम्बो कबीले की महारानी मंगोला का भेष बदल लिया था। चेलाराम ने रजिया का भेष उतार कर उसे पुलिस के सामने अपराधी सिद्ध कर दिया है और असली महारानी मंगोला और मोटू-पतलू रजिया की कैद से आजाद हो गये हैं। कागज पर बनी हमारी इस रंगीन फिल्म का अब अंतिम भाग देखिये और हंसते-हंसते दीवाने बन जाइये।




अगले दिन
सारी उम्र गंडेरियां चसने के लिये मेरा राजकुमार सरकारी खजाने से जितना रुपया चाहे ले सकता है ।
राजकुमार चेलाराम की जय ।
वीरता और जासूसी का कमाल दिखाने पर मिस्र की पुलिस की ओर से चेलाराम को उपहारों भरी यह ममी भेंट की जाती है ।
चल अब भारत लौट जाने की तैयारी करें ।
नोट जलाने की तैयारी करें ?. कौन से नोट जला रहे हो तुम ?
पर घसीटाराम जी का कहीं भी पता नहीं है ।
जंगल में कहीं मर खप गया होगा वह बिना विभाग का मंत्री । उसके लिये अब हम अफ्रीका में और नहीं रुक सकते ।
अच्छा मित्रो ! भारत के बच्चों तक मेरी शुभ कामनायें पहुंचा देना ।
मरजीना और जरीना का प्रणाम भी कहना ।
कभी मौका मिला तो हम आपसे मिलने भारत आयेंगी ।
अच्छा महाबली टार्जन । अब हम भारत के लिये आप सबसे विदा लेते हैं ।
मैं भी इनके साथ भारत जा रहा हूं । वहां मैं तुम्हें पेट भरकर हरी मिर्चें खिलाऊंगा ।


बचाओ-बचाओ--! मुझे बचाओ।
डाक्टर झटका के केबिन में से यह कैसी आवाज आ रही है ?
चलो डाक्टर झटका के केबिन में चलकर देखें।
डाक्टर झटका की बजाये बचाओ-बचाओ की आवाजें मुर्गियों की चोंच से तो नहीं निकल रही हैं ?
दरवाजे की झिरी से झांककर देख ! क्या माजरा है ?
माजरा यह है कि मेरी आंखें सन्तरे की फांकें बनती जा रही हैं, केबिन के अन्दर का दृश्य देख कर।
डाक्टर झटका की दवा से मुर्गे ऐसे हो गये हैं कि आज तक तो आदमी मुर्गा खाता था और आज मुर्गे आदमी खा रहे हैं।
मोती महल का तंदूरी मुर्ग तो सुना था। यहां तंदूरी आदमी खाया जा रहा है।
मुझे रोस्ट किये बिना ही टिमाटर की चटनी से लगा कर खा जाओगे ! अरे ऐसा अनर्थ तो किसी ने भी नहीं देखा होगा आज तक।



आगामी अंक में अपने इन प्रिय जोकरों से मिलना और इनके

क्यों और कैसे

कई बार दिमाग में टेढ़े प्रश्न उठ खड़े होते हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत ऐसे ही उलझे हुए प्रश्नों के सुलझे हुए उत्तर दिये जायेंगे। आप इस स्तम्भ में ज्ञान-विज्ञान सम्बन्धी प्रश्न लिख कर भेज सकते हे।

शाहबाज खां—मुज्जफर नगर

प्र० : फोटोग्राफी का आविष्कार किसने किया और कब किया ?

उ० : फोटो ग्राफी का किसी एक आदमी ने आविष्कार नहीं किया। यह कई लोगों के लगातार परिश्रम का फल है, कि हम आज इतनी बढ़िया तस्वीरें खींच सकते हैं।

ग्यारहवीं शताब्दी में फोटोग्राफी बिना लेन्स के कैमरे द्वारा की जाने लगी और सोलहवीं शताब्दी तक ऐसे ही कैमरे से होती रही। तत्पश्चात १५६८ ई० में "डेनियलो बारबरो" ने पहली बार कैमरे में लैन्स लगाया था। फिर १८०२ई० में थोमस वेजवुड और सर हैमफ्री डेवी ने कागज पर कच्ची तस्वीरें ली थीं। उसके बाद जोनफ निपसी ने १८१६ ई० में एक गहनों का डिब्बा लेकर उसका कैमरा बनाया तथा उसमें माइक्रोस्कोप का लैन्स लगाया और इस कैमरे से पहला नैगेटिव बनाया। इन सबके परिश्रम के फलस्वरूप १८३५ई० में विलियम पेलबोट ने पहला पोजिटिव (Positive) बनाया, पहली तस्वीर बनाई। सन १८१८ ई० में बोक्स कैमरा सर्वप्रथम कौडेक सिस्टम द्वारा चालित, ईस्टमैन ड्राई पलेट एन्ड फिलम कम्पनी ने बाजार में बेचना शुरू किया और आज हम हर प्रकार की बढ़िया से बढ़िया फिल्में बनाते और देखते हैं।

प्र० : लाल कपड़े पर सांड हमला क्यों करता है ?

उ० : स्पेन में सांडों की लड़ाई एक बहुत प्रसिद्ध खेल है। जिसमें एक ओर सांड और दूसरी ओर एक आदमी लाल रंग का कपड़ा लेकर हिलाता है। जिसको देखकर वह सांड क्रोधित हो जाता है और उत्तेजित होकर वह Matador वृषहन्ता पर धावा बोल देता है। यह वृषहन्ता अपना बचाव खूब करना जानता है। वह उस कपड़े को दूर पास इधर-उधर करके ही अपनी रक्षा कर लेता है। ऐसा कहा जाता है कि केवल लाल कपड़ा दिखाकर ही



सांड को उत्तेजित किया जा सकता है। सच्चाई तो यह है कि सांड को रंगों की कोई पहचान नहीं होती है। वृषहन्ता के हाथ में हरा, नीला, पीला अथवा सफेद किसी भी रंग का कपडा हो तो भी वह सांड को उसी प्रकार उत्तेजित कर सकता है जैसे लाल रंग के कपड़े द्वारा। वास्तव में तो वह कपड़े के हिलने से ही उत्तेजित होता है। परन्तु यदि उसके हाथ में सफेद कपड़ा हो तो वह लाल रंग के कपड़े की बजाय अधिक उत्तेजित होगा चूंकि वह उसको सफाई से देख सकता है।

प्र० : क्या आपने मछलियों और मेंढकों की वर्षा के बारे में सुना है ?

उ० : कहा जाता है कि मछलियों और मेंढकों की वर्षा हुई है। पिछले १६०० वर्षों से ही ऐसा सुनने में आया है। ऐसी वर्षा कोई सत्तर बार देश विदेशों में हो चुकी है।

विशेषज्ञ ऐसा मानते हैं, कि तेज हवा या पानी के साथ-साथ मछलियों, मेंढकों अथवा बवंडर और भी वस्तुओं को जो उस समय नदी में होती हैं ऊपर उड़ा ले जाती है। और फिर वह वर्षा के साथ नीचे आ जाते हैं।

इस प्रकार की विचित्र वर्षा की दो घटनाएं अमरीका में घटित हुई। पहली घटना ३० ०ई० में घटी। वर्षा दक्षिण केरोलीना की एक नदी से ३,४ मील की दूरी पर हुई थी। कहते हैं कि इस वर्षा में बहुत अधिक मछलियां बरसी थीं। परन्तु इस नदी में बहुत थोड़ी सी ही मछलियां थीं। इससे अनुमान लगाया गया कि, बादल और हवा इन मछलियों को अपने साथ काफी दूर से उड़ाकर लाए थे।

इस प्रकार की दूसरी प्रसिद्ध घटना अमरीका के 'रोहड आयलेण्ड' में घटी थी। यह वर्षा १५मई सन १६००ई. में हुई थी। कहते हैं कि इस वर्षा में इतनी अधिक मछलियां गिरी थीं कि लोगों ने बालटियां भरभर कर उन्हें बेचा था। यह मछलियां बहुत ही छोटी कवई मछलियाँ थीं।

ऐसा नहीं है कि यह वर्षा केवल अमरीका तक ही सीमित हो। इस प्रकार की वर्षा की खबरें सारे योरोप से मिली हैं। इनमें से सर्वाधिक ब्रिटेन से। कहते हैं कि ब्रिटेन में इस प्रकार की सत्रह बार वर्षा हो चुकी है। और सोलह बार शेष योरोप के देशों में। अभी कुछ वर्ष पूर्व ऐसी ही वर्षा की खबर जापान से भी मिली थी।

प्र० : प्रेशर कूकर में सब्जी शीघ्र क्यों गल जाती है ?

उ० : किसी द्रव पदार्थ के उबलने की क्रिया वह होती है जब सारे द्रव में से होकर भाप बननी शुरू हो जाती है और द्रव के भीतर से होकर भाप बुलबुले बनकर ऊपर की सतह पर आने लगती है। किसी भी पदार्थ को शीघ्र उबालने के लिये या तो उसका दबाव बढ़ाना पड़ेगा अथवा उसके तापमान को बढ़ाना पड़ेगा। यदि दबाव को बढ़ाया जाये तो उबलने का तापमान ऊँचा हो जाता है और दबाव घटाया जाए तो उबलने का तापमान नीचे आ जाता है। आमतौर पर पानी के उबलने का तापमान 100°C या 212°F होता है और वायुमण्डलीय दबाव १४वर्ग इंच होता है।आपने अनुभव किया होगा कि पहाड़ों पर सब्जी दाल आदि समतल जगहों कि अपेक्षा देर से गलती है, जबकि पानी हमें वहां पर भी उबलता हुआ नजर आता है। हम जितना ऊँचाई पर जाते जायेंगे वायुमण्डलीय दबाव कम होता जायेगा और उसी कारण, पानी के उबलने का तापमान भी कम होता जायेगा। समतल जगहों पर 100°C पर पानी उबलना शुरू हो जाता है और आमतौर पर पहाड़ों पर 70°C पर ही पानी उबलना शुरू हो जाता है। पहाड़ों में प्रेशर कूकर अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ है क्योंकि अधिक दबाव बढ़ा सकने के कारण उसमें हम पानी के उबलने का तापमान 20°C तक पहुंचा सकते हैं। प्रेशर कूकर एक बन्द बर्तन होता है जिसके ढक्कन में एक रबड़ और एक बल्व लगा होता है। यह रबड़ इस बर्तन को वायु रुद्ध बना देता है। इस ढक्कन में एक नली भी होती है जिसमें से भाप निकल सकती है। इसी नली पर वजन रख प्रेशर कूकर का दबाव घटाया-बढ़ाया जा सकता है।

जी हां हमने इस फीचर में भीड़ के दिल की बात भीड़ से ही कहलवाई है, देखिये, समझिये और मुस्कराइये

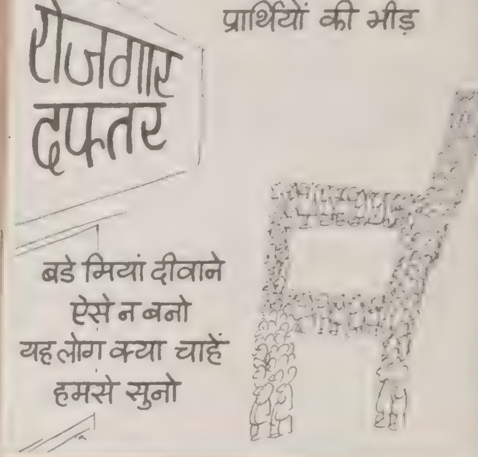
भीड़ मनोविज्ञान का दीवाना रूप

समझे ? भीड़ के दिल में क्या है ?



मोटर साइकिल द्वारा खाई कूदने वाले का करतब देखती भीड़

एम्पलायमैंट एक्सचैंज के सामने प्रार्थियों की भीड़



सुन्दर युवती के घर के सामने से गुजरती नवयुवकों की भीड़

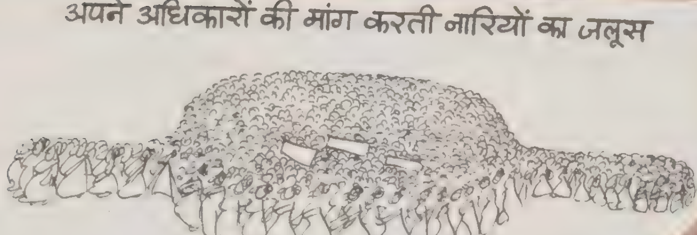


जडी-बूटियां और दवायें बेचने वाला फुटपाथिया मजमेबाज की बात सुनती भीड़



जनता खदेरन सिहं का रूप दिखाना चाहती है !

अपने अधिकारों की मांग करती नारियों का जलूस



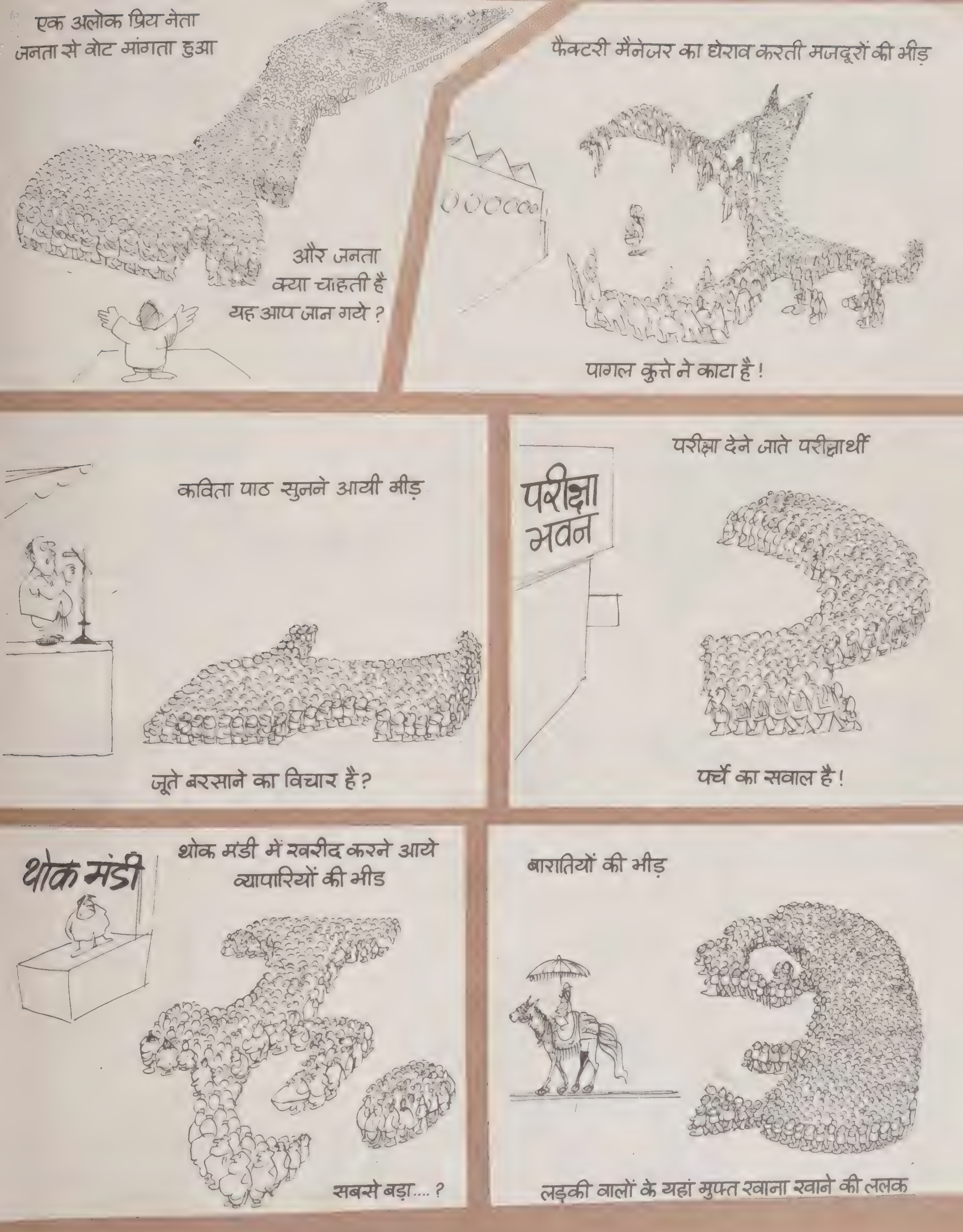
अब तो मान जाइये कि — नारी में महान् शक्ति है

फिलम स्टार के चित्र को देखती भीड़





(अंगूर खट्टे हैं)


एक अलोक प्रिय नेता
जनता से वोट मांगता हुआ
और जनता
क्या चाहती है
यह आप जान गये ?
फैक्टरी मैनेजर का घेराव करती मजदूरों की भीड़
पागल कुत्ते ने काटा है !
कविता पाठ सुनने आयी भीड़
जूते बरसाने का विचार है ?
परीक्षा देने जाते परीक्षार्थी
परीक्षा
भवन
पर्चे का सवाल है !
थोक मंडी
थोक मंडी में खरीद करने आये
व्यापारियों की भीड
सबसे बड़ा.... ?
बारातियों की भीड़
लड़की वालों के यहां मुफ्त खाना खाने की ललक



फैण्टम
और हीरा
मैं अपने जादू से तुम्हें खत्म कर दूंगा ।
जादूगर···तुम्हारे उन मैजिक स्टोर सेखरीदे हुए जादुओं से यहां कोई नहीं डरने वाला···
दुकान से खरीदे हुए जादू !
उनसे मैं तो डर गया था···।
मेरे पास एक और नया जादू है··· जिसमें तुम्हारी लाश ही मिलेगी ।
और अपनी मुट्ठी विचमैन उस जंगली पाउडर से भर लेता है जिससे मनुष्य को लकवा मार जाता है···
विचमैन···अब तुम नहीं बच सकते ।
तुम जिन्दा नहीं रह सकते फैन्टम···
वह पाउडर को फैन्टम की तरफ फेंकता है···।
अब···तुम्हारी मौत आई है ।
मैं इसी की इन्तजार में था···तुमने यही जादू निक पर चलाया था···
विचमैन···यह तुम्हारी आखिरी चालाकी है ।
और वह पाउडर के नीचे लेट जाता है···।
अह
···और यह घूसा उसके दादा जी के बदले में जिनका तुमने हीरा चुराया !
यह उस छोटी बच्ची रीमा के बदले में··· जिसका तुमने जंगल में पीछा किया था, विचमैन···
और हर घूसे के साथ खोपड़ी का निशान ।
राजकुमार अजीज, अब तुम बाहर निकल आओ यह रही उसके जादू की पोटली···
जादुई बम्ब अपने मित्रों को मूर्ख बनाईये ।
ऊह···मैं इसका दोस्त तो नहीं हूं परन्तु इसने मुझे बेवकूफ बना ही दिया···?
एक गरीब किसान को यह अपने खेत में मिला था ।···और इसकी कीमत एक राजा के पूरे राज्य के खजाने के बराबर है ।
दादा जी, यह क्या है ?
हीरा है, रीमा !
और इसे बेचकर वह अपना गाँव दुबारा बनवाना चाहता है··· और अपनी पोती का दहेज बनाना चाहता है···
अगर यह असली है तो उसे इसकी कीमत अवश्य मिलेगी···तुम नकाब में कोई अजनबी दीखते हो···अ···तुम हो कौन ?



आत्म हत्या (पृष्ठ १८ से आगे)

क्योंकि उस नोट को सुमन्त टूक-टूक किये डाल रहा था। उसकी लाल-लाल ज्वाला उगलती आँखों को देख वह डरकर बोली—"सुमन्त, यह क्या कह रहे हो, भैया ? लक्ष्मी पर गुस्सा नहीं उतारा जाता ।"

सुमन्त ने उन फटे टुकड़ों को मुट्ठी में भींचकर मसल डाला और कहा—"किशन को अभी भेजना, चाची, मैं अभी उसे लेने जाऊँगा ।"

द्वार की ओट से चन्द्रा बाहर निकल आई । बोली—"वह आवारा है, बद-चलन है, वह मेरे घर में पैर नहीं रख सकता !"

सुमन्त ने फटी-फटी आँखों से उसकी ओर देखा, मानो उसे पहचानता ही न हो । फिर धीर-गम्भीर भाव से कहा—"घर जितना तुम्हारा है, उतना ही उसका भी है । रही आवारा होने की बात, सो वह अभी आवारा नहीं हुआ है । किन्तु यदि तुम्हारी सोहबत में रहा, तो निश्चय ही आवारा हो जायेगा ।"

चन्द्रा की सारी देह में मानो आग लग गई । तड़पकर बोली—'अपनी बेजबान पत्नी को झूठ-मूठ कलंक लगाते तुम्हें लज्जा नहीं आई ? मुझे बदचलन कहने से पहले…'

"मेरी जबान कटकर क्यों नहीं गिर गई, यही न ?" सुमन्त ने हँसकर कहा—"महारानी, तुम्हारी जबान की मिठास से मैं भली-भाँति परिचित हो चुका हूं । उसमें अब और अमृत घोलने का प्रयत्न मत करो । सुन लो कान खोलकर कि किशोर यहीं रहेगा, इसी घर में ! और जैसा व्यवहार तुम नन्हे के साथ करती हो, वैसा ही उसके साथ भी करना होगा; नहीं तो याद रखना, मैं तुम्हारे नन्हे को घर से निकालकर आवारा बना दूंगा ।"

चन्द्रा ने तड़पकर अपने अन्तिम अस्त्र का प्रयोग किया । कहा—"यदि वह इस घर में आयेगा, तो मैं अपने नन्हे को मार, स्वयं आत्म-हत्या कर लूंगी ।"

सुमन्त ठठाकर हँस पड़ा । कहा—"तुम्हारी आत्मा शेष है ही कहां, जिसकी अब हत्या करोगी ? उसकी तो तुम नित्य सौ-सौ बार हत्या किया करती थीं, जब कि तुम दो अबोध बालकों में भेद किया करती थीं; किसी की बाल-सुलभ चपलता पर प्रेम उमड़ने पर भी जब तुम अपनी आत्मा का गला घोंट, उसका निरादर कर दूसरे से स्नेह करती थीं । कुढ़-कुढ़कर आत्म-हत्या तो बहुत कर चुकीं, अब हँस-हँसकर जीना भी सीखो । आओ मिसरानी माँ, चलें ।" ●

रहस्य कथा

यह फीचर पढ़ते समय यही समझिये कि आप आने वाले सन् २१८५ में पहुंचे हुये हैं

दगाबाज यंत्र मानव

यंत्र मानव युग

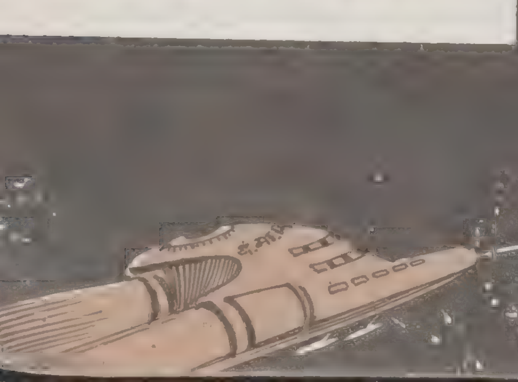
सन २१८३—भारत खनिज निगम ने अपना कार्य क्षेत्र अपने तारा समूह के दूर के तारों तक फैला लिया था। प्रतिदिन दर्जनों अंतरिक्ष यान विभिन्न तारों के लिये उड़ान भरते और दर्जनों पृथ्वी की ओर लौटते। इस यातायात को सुचारू रूप से चलाने के लिये भारत सरकार ने पृथ्वी से दो प्रकाश वर्ष दूर एक विशाल अन्तर-नक्षत्रीय-यान जंकशन अंतरिक्ष में स्थापित कर रखा था। दो प्रकाश वर्ष दूरी वही होती है जिसे एक यान प्रकाश की गति से (लगभग तीस लाख किलो मीटर प्रति सैकिंड) दो वर्ष में तय कर अर्थात ३००००० × ६० × ६० × २४ × ३६५ किलो मीटर दूर इस विशाल जंकशन पर मानव तथा यंत्र मानव दोनों काम करते थे। यहां से रोज बीसियों विशाल अंतरिक्ष यान तारा समूह में अपने-अपने लक्ष्य की ओर चल पड़ते और बीसियों खनिज से लदे यान पृथ्वी की ओर कूच करते। जंकशन के इन्चार्ज सेना के रिटायर्ड जनरल रॉबिन शाह थे। इस समय जंकशन पर नीरसता छाई है, ऐसा लग रहा है जैसे हड़ताल हो गई हो। न कोई यान उतर रहा है, न कोई उड़ रहा है। जंकशन के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ है। सचमुच ही कोई आपात्स्थिति उत्पन्न हो गयी है, तभी ज०. रोबिन शाह ने तीन अति आवश्यक आदेश तुरन्त लागू करने के लिये जारी किये हैं।

१. जंकशन पर सारा काम तुरन्त रोक दिया जाये जो चीज जहां पड़ी है वहीं पड़ी रहें। कर्मचारी अपने-अपने केबिनों में जायें।

२. कोई यान जंकशन पर नहीं उतरेगा, न जो पहले ही उतर चुके है वह उड़ेंगे, अर्थात न ही कोई जंकशन में प्रवेश करेगा न ही प्रस्थान।

३. भारत सरकार के अंतरिक्ष गश्ती यान में भारत यंत्र मानव निगम के चेयरमैन डाक्टर भटनागर तथा यंत्र मानव मनोविज्ञान डा० सुधा को शीघ्र से शीघ्र जंकशन पर लाने का प्रबन्ध किया जाये। [इस विषय में भारत सरकार तथा यंत्र मानव निगम को आपा-



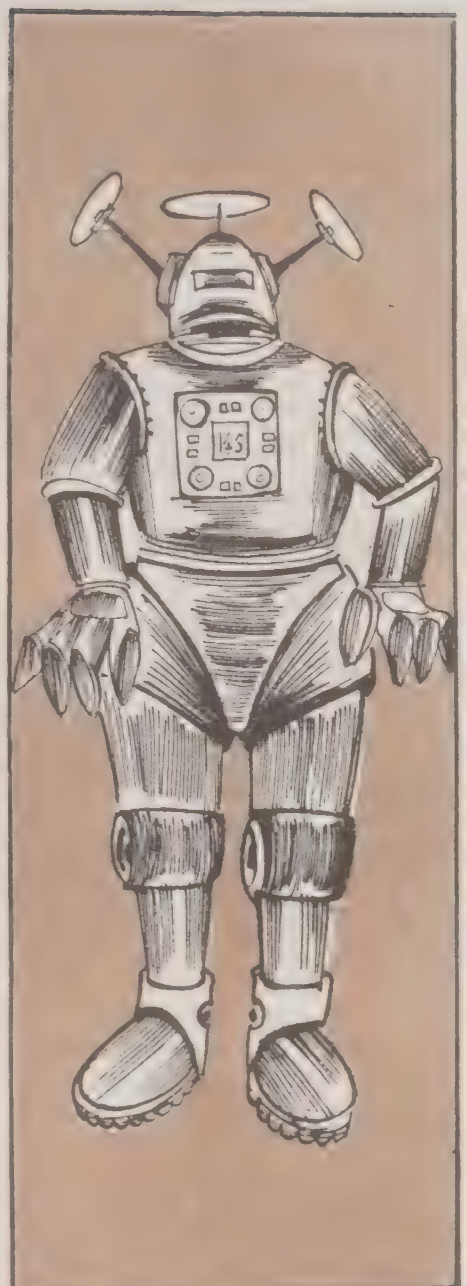


त्कालीन संदेश भेजे जा चुके हैं] ।

डाक्टर सुधा कभी पृथ्वी छोड़ कर अंतरिक्ष स्टेशनों या दूसरे ग्रहों पर नहीं गयी थीं न ही उनकी कभी जाने की इच्छा रही है । वास्तव में उन्हें अंतरिक्ष युग की घरेलू लड़की कहना उचित होगा । अंतरिक्ष जंकशन पर रात्रिभोज के समय उसके तने हुये अधेड़ चेहरे से साफ पता लगता था कि वह खुश नहीं है । अप्रत्यक्ष रूप से उसने ज० राबिन शाह पर व्यंग्य किया भी कि वे फिजूल छोटी-सी बात पर आसमान सिर पर उठा रहे हैं। डा० भटनागर भी कोई विशेष उत्साहित नजर नहीं आ रहे थे । रात्रि का भोजन सबने तनाव के वातावरण में तथा अनमने भाव से किया । भोजन के तुरन्त बाद ही मीटिंग की व्यवस्था थी । रॉबिन शाह ने अपने गंजे सिर पर हाथ फेरते हुए कहना आरम्भ किया, "डाक्टर भटनागर तथा सुधा जी, यह एक अजीब कहानी है लेकिन मैं पहले आप दोनों को धन्यवाद देना चाहूंगा जो कि आप हमारे बुलाने पर प्रथम गश्ती यान से ही चले आये जबकि हमने कारण भी स्पष्ट नहीं बताया था । खैर समस्या यह है कि हमारा एक यंत्रमानव गायब है । हमने सारे काम रोक दिये हैं । जब तक यह यंत्रमानव नहीं मिलता काम शुरू नहीं होगा । उसे खोजने में हम आप जैसे विशेषज्ञों की सहायता चाहते हैं अब...।"

डाक्टर सुधा जो पहले से ही चिढ़ी थी बात काट कर बोलीं, "एक यंत्रमानव गायब होने पर यह हव्वा क्यों खड़ा किया गया है मुझे तो समझ नहीं आता कौन सी आफत आगई है ! और उसे ढूंढने में कठनाई ही क्या हो सकती है ?"

जनरल का चेहरा तमतमा गया, अगर मिलिट्री में होता तो सुधा को कोर्ट मार्शल करवा देता, "फिलहाल अपनी झेंप व रोष दबा कर बोला, "बात यह है कि वास्तव में एक तरह से हमने खोज लिया है उसे। मुझे पूरी बात बतानी पड़ेगी । कल एक माल यान हमारे जंकशन पर उतरा था । उसमें दो यंत्र-मानव हमारे लिये आये थे । बासठ और यंत्रमानव और स्टेशनों के लिये थे । हमारे स्टेशन का पहले का आया एक यंत्र मानव हाजिरी के लिये नहीं पहुंचा । हमने सब जगह खोजा, नहीं मिला। फिर उस माल यान की हमने तलाशी ली जिसमें ६२ यंत्रमानव लदे थे । हमने गिनती की तो ६३ निकले। मतलब साफ है कि हमारा खोया यंत्र मानव उनमें शामिल हो गया है ।"



सुधा ने व्यंग्य पूर्वक कहा, "हां तो ६३ वां यंत्रमानव आप वाला है । उसे रखलो इतनी साधारण-सी बात !"

"लेकिन हमें यह कैसे पता लगेगा कि कौन सा ६३ वां है ? जनरल ने कुछ तेज स्वर से पूछा ।

कमरे में चुप्पी छा गई । दीवार की अणुचालित घड़ी की किट-किट की आवाज गूंजती रही । सुधा धीरे से बुदबुदायी जैसे स्वयं से कह रही हो, "बड़ी अजीब बात है । अरे ६३ में से कोई सा भी रखलो । क्या फर्क पड़ता है ? बस इतनी से बात के लिये हमें खरबों मील दूर बुलाया !" सुधा और भी कुछ कहती परन्तु डाक्टर भटनागर ने हाथ से उसे रोका और रुक-रुक कर बोलने लगे,

"डा. सुधा यह एक गुप्त बात थी । अब तक इतनी गुप्त कि निगम में हम दो तीन व्यक्ति ही इस बारे में जानते थे । तुमसे भी गुप्त रखी गयी थी। बात यों है कि इस जंकशन पर कुछ ऐसे यंत्रमानव प्रयोग किये जा रहे हैं जिनमें यंत्रमानवों का प्रथम नियम पूरी तरह अंकित नहीं है ।" [प्रथम नियम—यंत्रमानव अपनी क्रिया अथवा निष्क्रियता से मानव को हानि या आघात नहीं पहुंचने देगा ।]

सुधा की आंखें फैल गयीं, "क्या मतलब, प्रथम नियम अंकित नहीं है ?"

डाक्टर भटनागर ने उत्तर दिया, "सर-कार ने हमें आज्ञा दी थी ऐसा यंत्रमानव बनाने के लिये, हम क्या करते ?"

सुधा गुस्से में भरी उठ खड़ी हुयी, "आपको पता है यह अंतर्राष्ट्रीय अपराध है ? अंतर्राष्ट्रीय समझौते के अनुसार बिना तीन यंत्रमानव नियमों को उनके पासीड्रान मस्तिष्कों में गहरे अंकित किये यंत्रमानव नहीं बनाये जा सकते । यदि इस बात का पता लग गया तो निगम पर अंतर्राष्ट्रीय अदालत में संगीन मुकदमा चलाया जा सकता है । भारत की राष्ट्रसंघ में भर्त्सना की जा सकती है । स्वयं हमारे ही देश के लोग भड़क जायेंगे । लोग तो वैसे ही यंत्रमानवों से आतंकित रहते हैं । इन तीन नियमों के कारण ही यंत्रमानव हमारी सेवा कर रहे हैं । प्रथम नियम अंकित न करने का मतलब, वह चाहे तो हमें हानि पहुंचा सकता है । हम तीनों को यहां आकर मार सकता है । इस जंकशन पर कब्जा कर सकता है । ऐसे-ऐसे यंत्रमानव कुछ और हों तो हो सकता है मानव जाति को ही गुलाम बना लें । आखिर यह नीच कार्य किया किस लिये गया ?"

जनरल ने कंधे से दबा कर सुधा को बैठाया और फिर सुधा की ओर मुँह करके बोले, "मैं बता रहा हूं, हमें ऐसे यंत्र मानवों की आवश्यकता पड़ी इस जंकशन पर । हमारे लोग जंकशन की उड़ान पट्टियों पर काम करने जाते हैं । अंतरिक्ष में थोड़ी बहुत गामा किरणें तो रहती ही हैं। इन थोड़ी बहुत गामा किरणों से मानव को कोई विशेष हानि नहीं होती । हां ज्यादा मात्रा में हों तो कुछ बिमारियां हो सकती हैं । पुराने ढंग के यंत्र मानव जिनके मस्तिष्कों में प्रथम नियम अंकित है वह रोड़ा बनने लगे । जैसे ही कोई कार्यकर्ता बाहर जाता तो यंत्र मानव उसे खींच कर अन्दर ले आते क्योंकि उन्हें तो बस यह



पता है कि गामा किरणें नुकसान देय हैं। प्रथम् नियम के कारण मनुष्य को बचाना उसका प्रथम कर्तव्य हो जाता है। इस प्रकार यहां काम ठप्प होने लगा। किसी को काम के लिये बाहर भेजना कठिन हो गया। कभी-कभी गामा किरणों की तेज धारायें भी बहती हैं। गामा किरणें स्वयं यंत्रमानव के लिये घातक हैं, वह पासीड्रान मस्तिष्क को जला डालती हैं। किसी मनुष्य को बचाने के लिये एक दो यंत्रमानव गामा किरणों के तूफान में दौड़ पड़े और जलकर नष्ट हो गये। करोड़ों की हानि हुयी। मनुष्य को तो ज्यादा से ज्यादा एक दो दिन के लिए बीमार ही कर सकती हैं यह किरणें। इन किरणों से हमें यहां कुछ इस प्रकार के यंत्रमानवों की आवश्यकता पड़ी जिनमें प्रथम नियम पूरी तरह अंकित न हो ताकि मानव कार्यकर्ता भी काम कर सकें और वे स्वयं भी सुरक्षित रहें।" जनरल के चेहरे पर पसीना छल-छला आया। अब तक सुधा का क्रोध कुछ शांत हो चुका था परन्तु तनाव की रेखायें अब तक चेहरे पर अंकित थीं। सुधा ने जनरल से पूछा, "आप उन ६३ यंत्रमानवों से पूछ तो सकते हैं कि किसने यहां काम किया है?" जनरल ने निराश स्वर में कहा, "पूछा तो था। सारे यही कह रहे हैं कि वह नये हैं, किसी ने यहां काम नहीं किया है। जाहिर है कि उनमें से एक झूठ बोल रहा है, वही हमारा खोया बेटा है।"

सुधा ने एक और नुक्ता निकाला, "यंत्र मानवों पर नम्बर तो लगे होंगे। उन नम्बरों से पता लग सकता है, सीरियल नम्बर।"

इस बार भटनागर ने उत्तर दिया, "नहीं। जबसे हमने बिना प्रथम नियम के यंत्र मानव बनाने शुरू किये क्रम संख्या डालना छोड़ दिया ताकि वे दूसरे सामान्य यंत्र मानवों के साथ बिना किसी का ध्यान आकर्षित किये भेजे जा सकें। मॉडल सबका एक है। बाहर से देखने पर कोई अन्तर नहीं लगेगा यह राका मॉडल के नाम से जाने जाते हैं। सामान्य मॉडल को हम राका-२ कहकर पुकारते हैं और बिना प्रथम नियम वालों को राका—१० के नाम से। परन्तु यत्र मानवों पर मॉडल की छाप भी नहीं डाली जाती।'

सुधा का पारा फिर चढ़ने लगा, "यह सारा काम बड़ा अजीब किया जा रहा है जैसे चोर और डाकू करते हैं। मानव जाति के विरुद्ध और अंतर्राष्ट्रीय समझौते का घोर उलंघन। अगर आप लोगों ने मिलकर यह गड़बड़ किया है तो खुद ही निबटो इसमें मैं क्या कर सकती हूं?"

भटनागर ने समझाना चाहा, "बच्चों जैसी बातें न करो—हम कर ही क्या सकते थे? सरकार ने गुप्त आदेश देकर हमसे बनवाया। क्या हम सरकार को इन्कार कर देते और लायसेंसों से हाथ धो बैठते?"

सुधा उठ खड़ी हुयी—तमक कर जाने लगी कहते हुये, "अब बड़ी थकावट हो रही है। मैं जरा आराम करना चाहती हूं और सोना भी—बाकी बातें सुबह तय करेंगे।"

सुधा के जाने के बाद भटनागर ने जनरल की ओर देख आंख दबा कर कहा, "इनकी बातों का बुरा न मानना रॉबिनशाह, यह जरा सनकी औरत है। पुरुषों से घोर घृणा करती है। अधेड़ आयु होने को आई विवाह नहीं किया।" जनरल भी उत्तर में मुस्करा दिया, फिर भौंहें सिकोड़ कर बोला, "अपने विषय के बारे में जानती तो है न यह? यंत्र मानव मनोविज्ञान!"

डा० भटनागर हंसा, "जनरल, डाक्टर सुधा यंत्रमानवों को ऐसे जानती है जैसे उनकी सगी बहन हो।"

खेल खेल में



दीवाली के उपलक्ष में

एक क्रिकेटी फुलझड़ी

आपको याद ही होगा कि कुछ वर्ष पूर्व जब दिल्ली में टैस्ट हो रहा था तो खेल के बीच एक कुत्ता मैदान में आया था। जिसके कारण खेल रोकना पड़ा था। खेल तभी शुरू हुआ जब उसे बाहर खदेड़ा गया। इस बार भी दिल्ली में टैस्ट होने वाले हैं, हमारे क्रिकेट के खिलाड़ियों को तो खैर टैस्ट की तैयारी करवायी ही जायेगी। हमारे दीवाने दिमागों में यह प्रश्न उठा कि क्या वह कुत्ता भी इस बार टैस्ट में भाग लेना चाहता है? वह क्या तैयारी कर रहा है? क्या प्रोग्राम है उसका? इन बातों का ख्याल आते ही हमने अपने विशेष संवाददाता गोवर्धन को इन्टरव्यू लेने भेजा। आपको तो पता होगा ही कि हमें वैसे भी पागल कुत्ते ने काट रखा है।

वह फिरोजशाह कोटला ग्राउंड गया। काफी देर ढूंढ़ने के बाद उसे वह काला कुत्ता एक पेड़ के नीचे हड्डी चबाता मिल गया। उसकी बांछें खिल उठीं--जाकर उस कुत्ते को नमस्कार कर उसने इन्टरव्यू लेने की इच्छा प्रकट की तो वह एक दो बार गुर्राकर इन्टरव्यू देने को तैयार हो गया। आगे इन्टरव्यू पढ़ें—

प्र०—इस बार फिरोजशाह कोटला ग्राउंड में इंगलेंड व न्यूजीलेंड से मैच होने वाला है, क्या आप उसमें खेल के दौरान मैदान में भाग कर टैस्ट में भाग लेंगे?

उ०—जी हां, मैं पूर्णतया स्वस्थ तथा फिट हूं, अवश्य टैस्ट में बाधा डाल कर दर्शकों का मनोरंजन करूंगा।

प्र०—आपने क्या तैयारी की है?

उ०—मैं रोज सुबह-शाम फिरोजशाह कोटला ग्राउंड के दो चक्कर लगा लेता हूं। आपको यह जानकर खुशी होगी कि मैं केवल तीन मिनट में ही सारे ग्राउंड का चक्कर लगा लेता हूं।

प्र०—आपने पहले किन-किन टैस्टों में बाधा डाली।

उ०—अब तक मैं पांच टैस्टों में बाधा डाल चुका हूं। एक बार जब रैडपाथ बैटिंग कर रहा था, एक बार गवास्कर की बैटिंग के समय, एक बार विश्वनाथ की बैटिंग के समय, एक बार जब टोनीग्रीग बैटिंग कर रहा था और एक बार मैंकेंजी की बैटिंग के समय। आपको याद होगा पिछली बार जब मैं मैदान में दौड़ा तो जोगाराव और जसदेव सिंह ने पूरे दस मिनट तक कमेंट्री में मेरा वर्णन किया था। मुझे विश्वास है कि आनंद जी डोसा के रिकार्डों में भी इसका वर्णन होगा।

प्र०—खेल में बाधा डालने के पीछे आपका उद्देश्य क्या होता है?

उ०—खेल के तनाव को कम करना। मैं प्रायः तब दौड़ता हूं जब कोई बैट्समैन आऊट न हो रहा हो। मेरे कारण उसका कंसेंट्रेशन टूट जाता है और वह आऊट हो जाता है। इस प्रकार खेल में तेजी आती है।

प्र०—विदेशों में भी क्या कुत्ते टैस्टों में भाग लेते हैं?

उ०—क्यों नहीं—इंगलेंड के लार्डस ग्राऊंट और मेलबोर्न के ग्राउंड में कई चैम्पियन कुत्ते हैं। मेलबोर्न वाले कुत्ते ने तो एक सिपाही को काट भी खाया था जब वह उसे खदेड़ने मैदान में गया।

प्र०—क्या आपका भी कभी किसी पुलिस वाले को काटने का प्रोग्राम है?

उ०—नहीं साहब, हमारे यहां के पिच धीमे हैं, खेल भी धीमा होता है। लोगों में जोश व गर्मी उतनी नहीं आती। फलस्वरुप हमारा भी इतना जोश नहीं होता कि पुलिस वाले को काट खायें।

प्र०—अच्छा तो कुत्ता जी, इस देश में कुत्तों के टैस्टों में भाग लेने के क्या भविष्य हैं?

उ०—भविष्य बहुत उज्जवल है। मैं इस बार टैस्ट में भाग लेकर रिटायर होना चाहता हूं ताकि नये कुत्तों को अवसर मिले। यदि योग्य पिल्ले मिल जायें तो मैं ट्रेनिंग स्कूल खोलने की सोच रहा हूं।

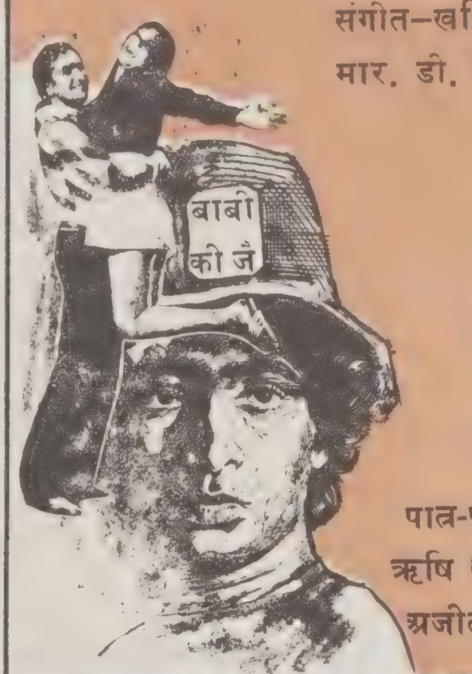
गोवर्धन—अच्छा साहब बहुत-बहुत धन्यवाद।

मटका किंग, झटका रिंग, लटका सिंह, खटका थिंग श्री श्री १००५२ रौटन खटरी अब फिल्म भी बनाने लग गये हैं। यह उन्हीं की फिल्म है। मटके में लोगों को तबाह करके ही श्रीमान को चैन नहीं आया या हो सकता है मुफ्त के पैसे को ठिकाने लगाने का और कोई तरीका नजर न आया होगा।

निर्देशक–एस. राम अनाथन

संगीत–खलिहान जी अनाज जी

मार. डी. फिल्मस का

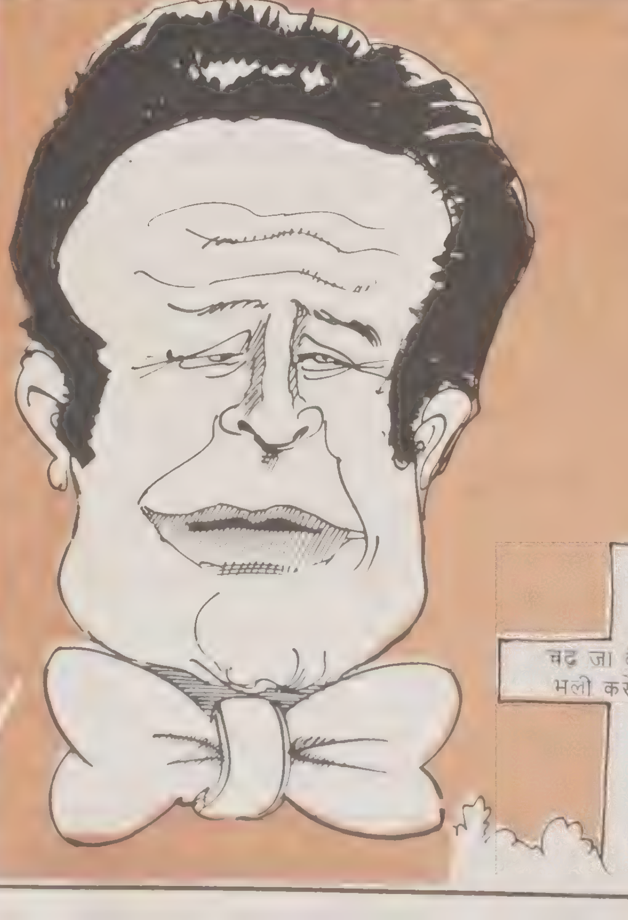


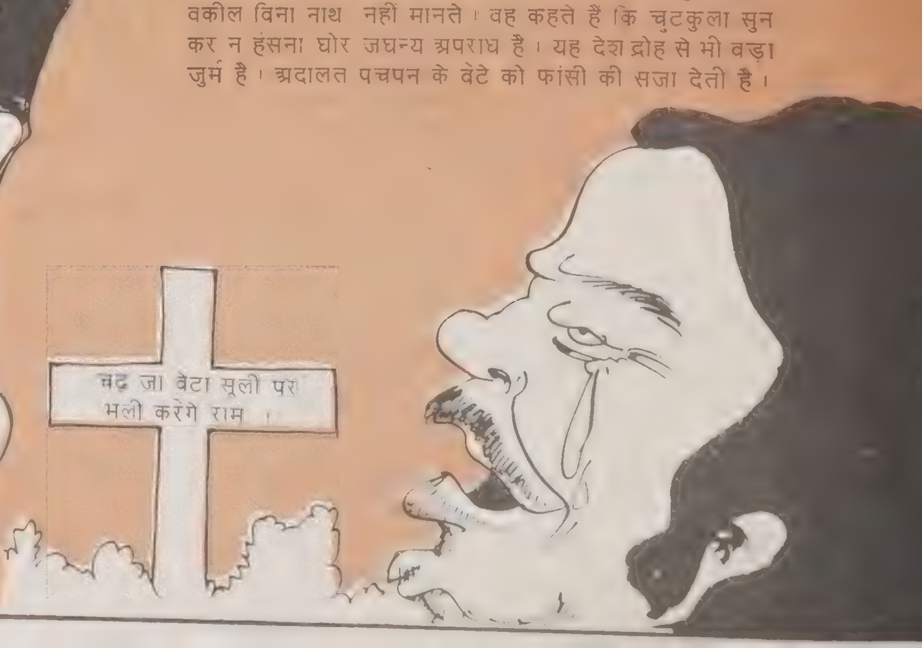
गीला देन

बनाम रंगीलारत्न

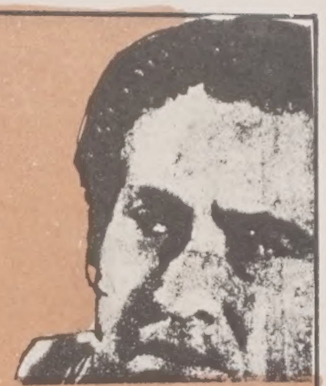
पात्र-परिचय–अशोक कुमार–बिना नाथ, ऋषि कपूर-किचन-रौटन, परवीन बाबी-कद्दू अजीत-पचपन, डा० श्री राम लागू--अण्डा

किसान पचपन का बेटा एक आदमी छरिया के चुटकुले सुन रहा था। एक चुटकुला सुन कर वह हंसा नहीं। घिसा-पिटा चुटकुला था। पुलिस पचपन के बेटे को छरिया का चुटकुला सुन कर न हंसने के जुर्म में पकड़ लेती है। उस पर खून का इल्जाम लगता है। सच है छरिया को आशा थी कि चुटकुला सुन कर वह हंसेगा, न हंस कर उसने छरिया की आशा का खून कर दिया था। सरकारी वकील बिनानाथ पचपन के बेटे के विरुद्ध बहस करते हैं। पचपन वकील के घर जाकर उनसे विनती करता है कि उसके बेटे को वह बचा लें। परन्तु सरकारी वकील बिना नाथ नहीं मानते। वह कहते हैं कि चुटकुला सुन कर न हंसना घोर जघन्य अपराध है। यह देश द्रोह से भी बड़ा जुर्म है। अदालत पचपन के बेटे को फांसी की सजा देती है।





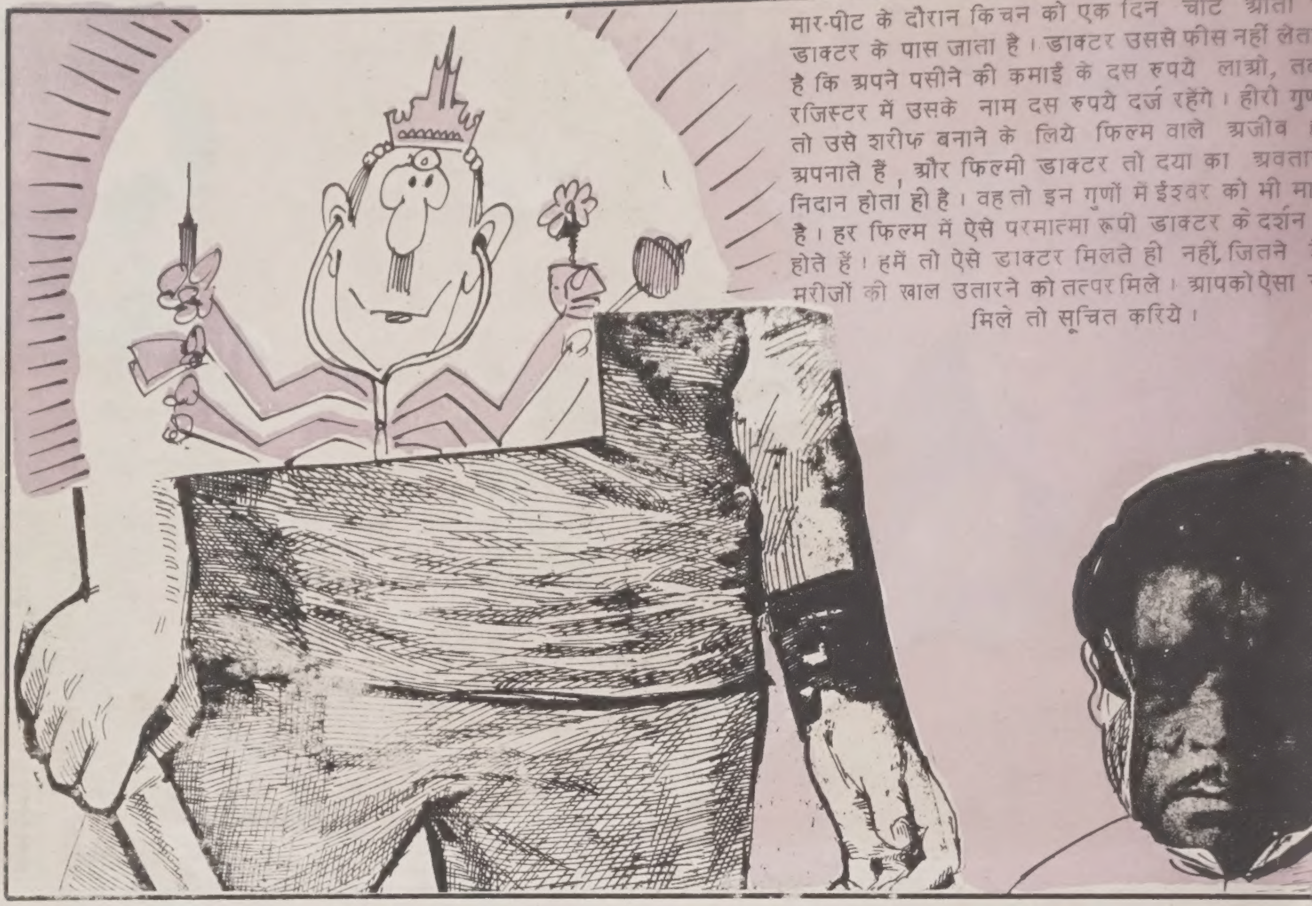




किसान पचपन टूटे दिल से घर आता है तो अपनी पत्नी को बेटे के गम में मरा पाता है। इससे उसके दिल में आग भड़क उठती है। वह इस सब हादसे का जिम्मेदार सरकारी वकील बिना नाथ को मानता है। इसलिये उससे बदला लेने का निश्चय करता है। बदला लेने के लिये बर्थ डे पार्टी वाले दिन वह बिना नाथ के लड़के टोपाल का अपहरण करता है। हाल में बैठे दर्शक दिल ही दिल में पचपन को दुआयें देते हैं कि इसने पार्टी से पहले ही अपहरण कर उन्हें बर्थ डे पार्टी के बोर करने वाले गाने से बचाया। एक और भी नुक्ता यह है कि फिल्मों में बदला लेने का एक ही तरीका है। वह है बच्चों का अपहरण करना। हमारी फिल्मों में अपहरण करना सबसे आसान काम है, सच मानियेतो इतना आसान जामुन के मौसम में दिल्ली में पेड़ों से जामुन चुराना भी नहीं होता। अपहरण से सारे घर में शोक छा जाता है, शोक सूचक संगीत बजता है।

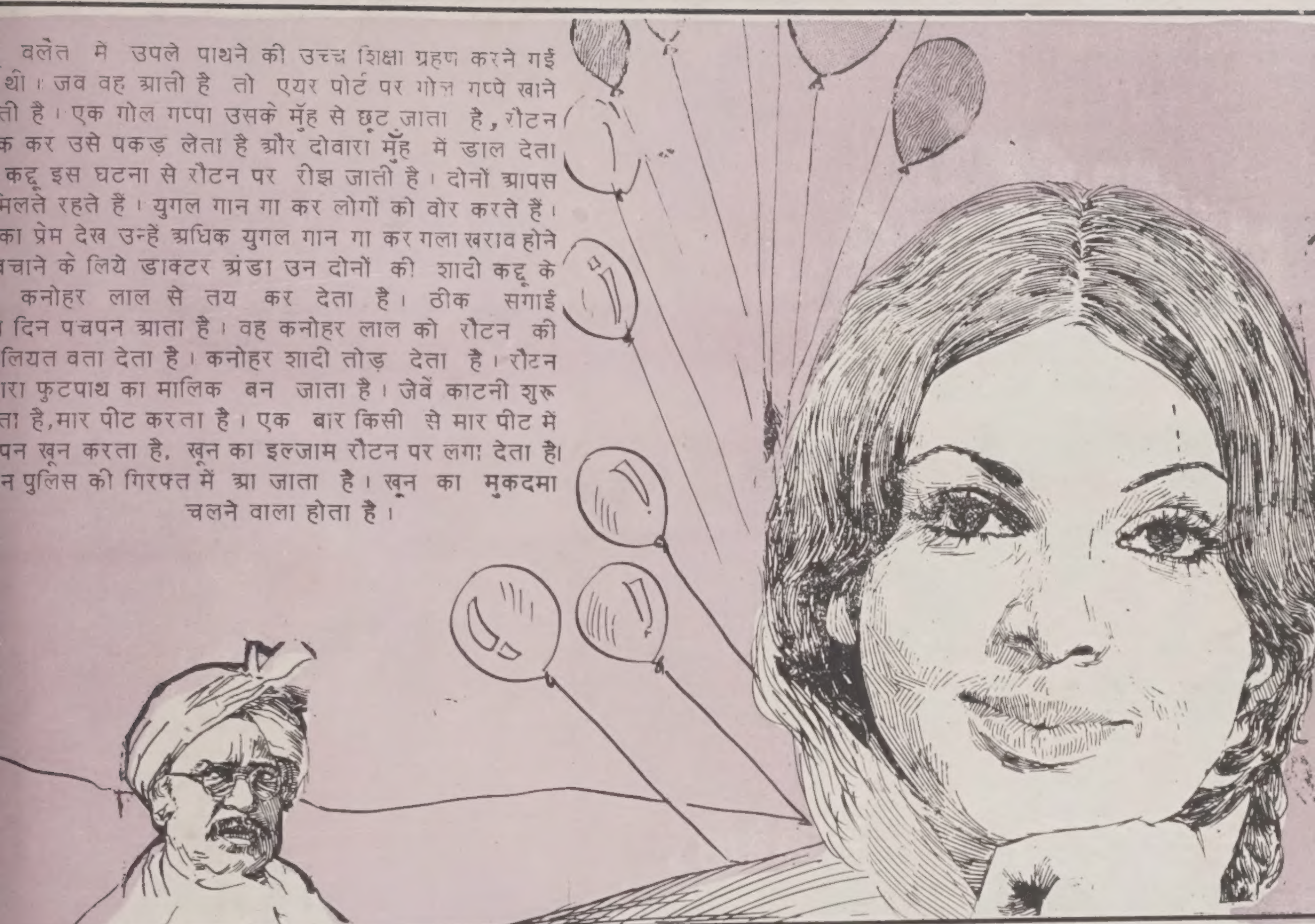
पचपन बिना नाथ के बेटे को किचन के नाम से पालता है। वह स्वयं भी गुण्डा बन जाता है और किचन को भी गुण्डागीरी सिखाता है। गुण्डा बनना भी फिल्मों में बड़ा आसान है। हर लल्लू-पंजू जिसका जी करे गुण्डा बन कर घूमता है, पुलिस भी उससे भय खाती है। किचन भी चटकी नाम की लड़की के साथ मार-पीट करता फिरता है। लोगों की जेबें काटता है। ऋषि बेचारे के पास और कोई चारा नहीं रह गया है। उसने देखा कि खेल-खेल में शरीफ लड़के का रोल किया, वह उसे हिट न बना सकी। जहरीला इंसान में झल्ले का रोल किया, वह फिल्म भी पिट गई। राजा फिल्म में भी ऐसे ही नर्म लड़के का रोल किया, वह भी नहीं चली। तो अब बेचारे ने सोचा कि चलो गुण्डा बन कर ही देखा जाये, शायद हिट हो जाये। फिर वह हर फिल्म में जूनियर गुण्डे के रूप में आयेगा। पर लोगों ने बेचारे को गुण्डे के रूप में भी पसन्द नहीं किया।



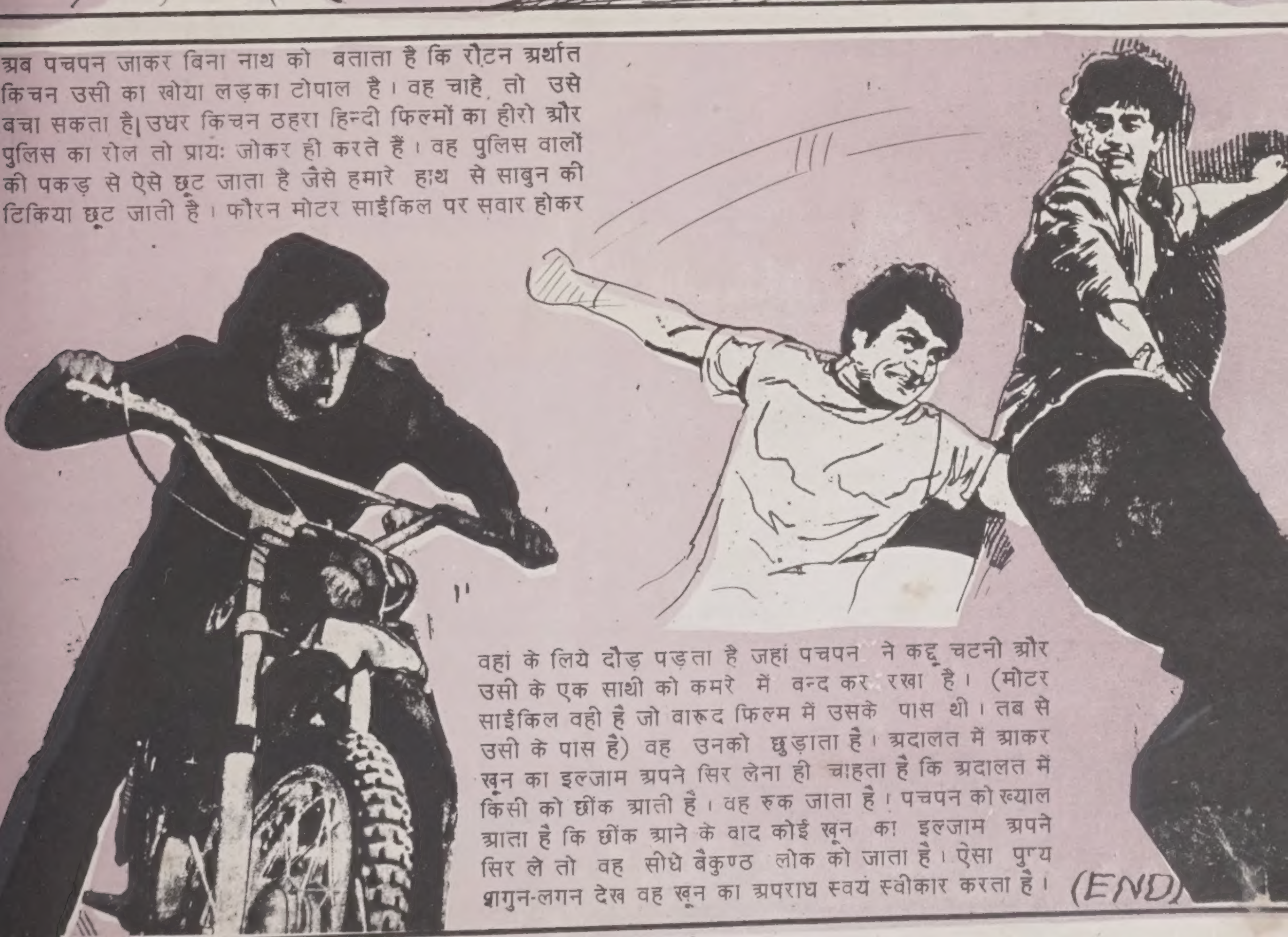

मार-पीट के दौरान किचन को एक दिन चोट आती
डाक्टर के पास जाता है। डाक्टर उससे फीस नहीं लेत
है कि अपने पसीने की कमाई के दस रुपये लाओ, त
रजिस्टर में उसके नाम दस रुपये दर्ज रहेंगे। हीरो गु
तो उसे शरीफ बनाने के लिये फिल्म वाले अजीव
अपनाते हैं, और फिल्मी डाक्टर तो दया का अवता
निदान होता ही है। वह तो इन गुणों में ईश्वर को भी मा
है। हर फिल्म में ऐसे परमात्मा रूपी डाक्टर के दर्शन
होते हैं। हमें तो ऐसे डाक्टर मिलते ही नहीं, जितने
मरीजों की खाल उतारने को तत्पर मिले। आपको ऐसा
मिले तो सूचित करिये।


अब किचन मेहनत मजदूरी करता है। इस प्रकार दस रु
कमा कर डाक्टर को देने जाता है। डाक्टर अंडा की मां
डाक्टर का वेटा रौटन समझ लेती है। डाक्टर किचन से क
है कि वह उसके वेटे रौटन के रूप में उसी के पास रहे
तो उसकी मां के वाल गम में सफेद हो जायेंगे और उसे खि
का खर्चा उठाना पड़ेगा। डाक्टर अंडा का वेटा रौटन दि
में एक वार चुल्लू भर पानी में डूब कर मर गया था। डा
ने सदमे से वचाने के लिये मां को यह वात नहीं वता रखी
अब रौटन डाक्टर अंडा के वेटे के रूप में वहीं रहने ल
डाक्टर के एक दोस्त कनोहर की लड़की कद्दू विलायत
आती है।
भाई जी, यह बलैक से आई है ?
नहीं यार बलैत से आई है।
LONDON

वलैत में उपले पाथने की उच्च शिक्षा ग्रहण करने गई थीं। जब वह आती है तो एयर पोर्ट पर गोल गप्पे खाने ती है। एक गोल गप्पा उसके मुँह से छूट जाता है, रौटन क कर उसे पकड़ लेता है और दोबारा मुँह में डाल देता कद्दू इस घटना से रौटन पर रीझ जाती है। दोनों आपस मिलते रहते हैं। युगल गान गा कर लोगों को बोर करते हैं। का प्रेम देख उन्हें अधिक युगल गान गा कर गला खराब होने बचाने के लिये डाक्टर अंडा उन दोनों की शादी कद्दू के कनोहर लाल से तय कर देता है। ठीक सगाई दिन पचपन आता है। वह कनोहर लाल को रौटन की लियत बता देता है। कनोहर शादी तोड़ देता है। रौटन ारा फुटपाथ का मालिक बन जाता है। जेबें काटनी शुरू ता है, मार पीट करता है। एक बार किसी से मार पीट में पन खून करता है, खून का इल्जाम रौटन पर लगा देता है। न पुलिस की गिरफ्त में आ जाता है। खून का मुकदमा चलने वाला होता है।



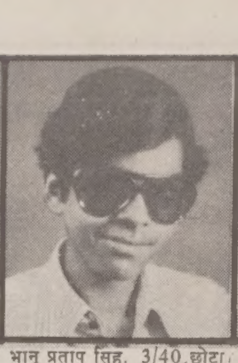
अब पचपन जाकर बिना नाथ को बताता है कि रौटन अर्थात किचन उसी का खोया लड़का टोपाल है। वह चाहे तो उसे बचा सकता है। उधर किचन ठहरा हिन्दी फिल्मों का हीरो और पुलिस का रोल तो प्रायः जोकर ही करते हैं। वह पुलिस वालों की पकड़ से ऐसे छूट जाता है जैसे हमारे हाथ से साबुन की टिकिया छूट जाती है। फौरन मोटर साईकिल पर सवार होकर



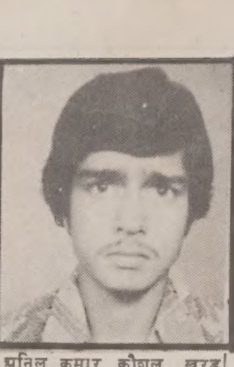
वहां के लिये दौड़ पड़ता है जहां पचपन ने कद्दू चटनी और उसी के एक साथी को कमरे में बन्द कर रखा है। (मोटर साईकिल वही है जो बारूद फिल्म में उसके पास थी। तब से उसी के पास है) वह उनको छुड़ाता है। अदालत में आकर खून का इल्जाम अपने सिर लेना ही चाहता है कि अदालत में किसी को छींक आती है। वह रुक जाता है। पचपन को ख्याल आता है कि छींक आने के बाद कोई खून का इल्जाम अपने सिर ले तो वह सीधे बैकुण्ठ लोक को जाता है। ऐसा पुण्य शगुन-लगन देख वह खून का अपराध स्वयं स्वीकार करता है। (END)



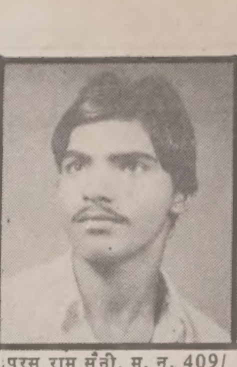
विजय कुमार सूद, 248, शोपिंग सेन्टर, कोटा, 21 वर्ष, मस्त रहना, मजाक करना, दुखी दीखना और आवाराओं के साथ रहना।



भानु प्रताप सिंह, 3/40 छोटा बाजार, शाहदरा, दिल्ली, 16 वर्ष, नकल उतारना, दीवाना पढ़ना, गाने गाना व फिल्मों में काम करना।



अनिल कुमार कौशल, खरड़ जिला, रूपनगर, 19 वर्ष, क्रिकेट खेलना, दीवाना व अन्य किताबें पढ़ना व चिल्ली जैसी एक्टिंग करना।



परस राम सैनी, म. न. 409/16, उदमीपुरा, झज्जर मार्ग, रोहतक (हरियाणा), 19 वर्ष, दीवाना पढ़ने का जोश दूसरे व्यक्तियों में पहुंचाना।



विनय कुमार सक्सेना, S/o श्री सतीश चन्द्र सक्सेना कानूनगो, सूत की मन्डी कासगंज, 15 वर्ष, क्रिकेट खेलना, फास्ट बौलिंग करना।



इकबाल सेठी, सेठी फोटोज रामगढ़ी, पटियाला, 8 वर्ष, गाना व खेलना, चिल्ली जी को दीवाली के उपलक्ष में मिठाई खिलाना।



राजन आर भाटिया, 82 अ, गोबिला रोड, चेम्बूर बोगा, 19 वर्ष, फिल्म में काम करना, दीवाना हाथ में लेकर प्रचार करना।



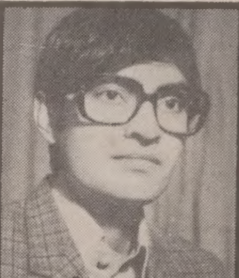
शाम लाल शर्मा, राज एन्ड कं. जैतोमन्डी, कपास पर बैठकर दीवाना पढ़ना, पत्र मित्रता के साथ पिलपिल साहब से प्यार करना।



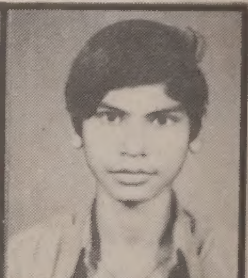
श्याम बिहारी, म. न. 1267, चमन गली हाथरस, 14 वर्ष, दूसरों के मुंह की तरफ देखकर उनसे भीख मांगना, व दीवाना पढ़ना।



रवीन्द्र कुमार अग्रवाल, 9/23, बाग मुजफ्फर खां, आगरा-28 21 वर्ष, देशी विदेशी लड़के व लड़कियों से पत्र-मित्रता करना।



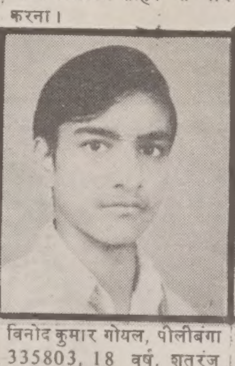
प्रमोद कुमार मिश्र, रूम न.-7 (खान) होस्टल न.-3 मेडिकल कालेज जबलपुर (म. प्र.), 22 वर्ष, संपादक द्वारा की गई अस्वीकृत रचनाओं को जोड़ना।



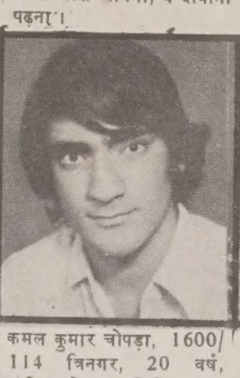
सुनील दत्त गुप्ता, 21, अ बालूगंज आगरा (उ. प्र.), 16 वर्ष, फिल्म देखना, गाने सुनना, सुन्दर लड़कियों को अपनी बहन बनाना।



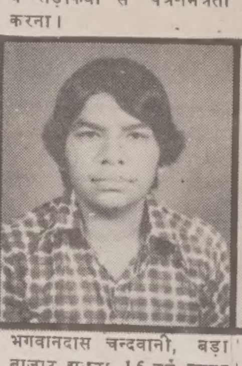
प्रदीप कुमार राजेश, एम. पी. द्विवेदी रोड, भागलपुर, 20 वर्ष, पत्र मित्रता, फोटोग्राफी करना व घर पर बैठकर दीवाना पढ़ना।



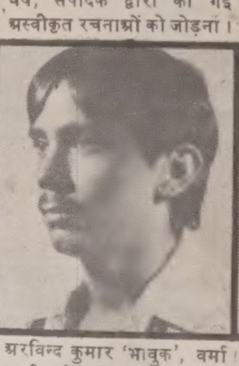
विनोद कुमार गोयल, पीलीबंगा 335803, 18 वर्ष, शतरंज खेलना, दीवाना के कलाकार चिल्ली साहब की शादी में शामिल होना।



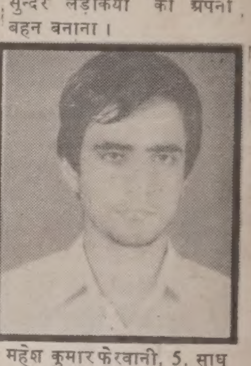
कमल कुमार चोपड़ा, 1600/114 त्रिनगर, 20 वर्ष, संगीत, लेखन, चिकित्सा व अभिनेत्रियों के साथ रहकर फोटो खिचवाना।



भगवानदास चन्दवानी, बड़ा बाजार, भाष्टा, 15 वर्ष, स्कूटर चलाना, दीवाना पढ़ना, बाल जमाना, हवाई जहाज में यात्रा करना।



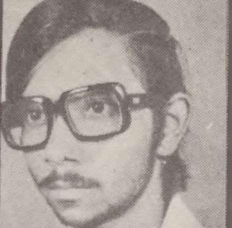
अरविन्द कुमार 'भावुक', वर्मा साड़ी स्टोर, रेलवे रोड, रोहतक, 18 वर्ष, क्रिकेट खेलना, गाने गाना, पत्र मित्रता, शायरी करना।



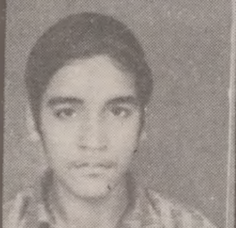
महेश कुमार फेरवानी, 5, साधु नगर, 15 वर्ष, क्रिकेट खेलना तथा दीवाना पढ़ना और राजेश खन्ना की फिल्म में रह कर शूटिंग करना।



लखन कुमार शर्मा, जनता ट हाऊस, नया बाजार, हारनपुर, 16 वर्ष, दीवाना ढ़ना, फिल्मी फोटो मंगवाना दि।



अनिल कुमार गहलोत, 87, फर्स्ट पोलो राम भवन, जोधपुर (राज.), 19 वर्ष, फुटबाल खेलना, पढ़ाई करना, और सिनेमा देखना।



अशोक कुमार गरोवर, मण्डी डबवाली, मेन रोड, जिला सिरसा, 15 वर्ष, पत्र मित्रता करना, दीवाना पढ़ना और पिक्चरें देखना।



अमृत पाल सिंह ढल, 7/118 रमेश नगर, न. 5, 15 वर्ष, लड़कियों से मित्रता करना, लड़कों से दूर रहना और दीवाना पढ़ना।

दीवाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना पेन फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर पेन फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना-तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। लिफाफे के कोने पर 'पेन फ्रेन्ड' लिखना व फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना ८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११०००२

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____________

पता ____________

आयु ________ शौक ________